चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिलें संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, युगाब्द 5127, फरवरी 2026

शिव भक्ति एवं स्वाभिमान यात्रा

महादेव की भूमि है हिमाचल की महिमा है न्यारी

डॉ. दयानंद शर्मा
संरक्षक, मातृवन्दना

भारत भूमि को महादेव की भूमि भी कहा जाता है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक हिमालय से हिन्द महासागर तक पावन एवं प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों पर शिव विराजमान दिखाई देते हैं। विभिन्न प्रदेशों में स्थापित बारह ज्योर्तिलिंग इस इस बात की पुष्टि करते हैं। सोमनाथ, मल्लिकार्जुन, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर केदारेश्वर, भीमशंकर, विश्वेश्वर त्र्यम्बकम्, वैद्यनाथ, नागेश, रामेश्वर तथा घुश्मेश्वर, ये बारह प्रसिद्ध ज्योतिलिंग है। कैलाश पर्वत और काशी में तो यह सर्वदा विद्यमान रहते हैं। हिमालय के आंचल में स्थित हिमाचल में तो शिव शक्ति का ही वास है। शक्ति स्वरूपा पार्वती स्वयं हिमालय की पुत्री है। वेद तथा आगमों में भगवान शिव को विशुद्ध ज्ञान स्वरूप बतलाया गया है। समस्त विद्याओं के मूल स्थान भगवान शिव ही हैं। उनका यह दिव्य ज्ञान स्वत: सम्भूत हैं। महादेव के डमरू से निकली ध्वनि से ही संस्कृत भाषा के स्वर-व्यञ्जनों की उत्पत्ति हुई, तभी इन्हें माहेश्वर सूत्र की संज्ञा दी गई है। ज्ञान, बल, इच्छा और क्रियाशक्ति में शिव के समान कोई भी दूसरा तत्व नहीं। भगवान शिव सबके मूल कारण, मूलाधार, रक्षक, पालक, नियंता एवं ईश्वर के भी ईश्वर महामहेश्वर हैं; उनका कोई भी कारण, आधार या नियंता नहीं है; श्वेताश्वेतरोपनिषद् इस तथ्य की पुष्टि करता है।

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते,न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते,स्वाभाविकी ज्ञान-बल-क्रिया च॥

इसी उपनिषद् के तृतीय अध्याय में उल्लेख है कि इस लोक का स्वामी एक ही रुद्र है। वह सभी प्राणियों में रहता हुआ लोक निर्मिती करता है एवं रक्षा करता है तथा प्रलयकाल में सबको अपने में समेट लेता है। जो रूद्र सब देवों का स्वामी है, विश्व का अधिपति एवं महर्षि है, वह हमारी बुद्धि को शुभ कर्मों से जोड़े।

भगवान शिव नित्य, अनादि और अजन्मा हैं। सभी भासमान ज्योतियों के मूलभूत प्रकाशक हैं। वह जागृत स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं से परे तुरीय अवस्था में पूर्ण ऐश्वर्य प्रदान करने वाले हैं। अनन्त सम्पदाओं के अधिपति होते हुए भी भस्म विभूषण है। श्मशानवासी कहे जाने पर भी त्रैलोक्याधिपति हैं। योगाधिराज होते हुए भी अर्धनारीश्वर हैं। सदा कांता से आलिंगित रहने पर भी मदनजित हैं। अजन्मा होने पर भी विविध रूपों में विराजमान हैं। निर्गुण होने पर भी गुणाध्यक्ष है। अव्यक्त होते हुए भी व्यक्त, एवं सबका कारण होते हुए भी अकारण है। शीघ्र ही क्रोधित होने अथवा रौद्र रूप होने पर भी शीघ्र प्रसन्न होने वाले आशुतोष हैं। ऐसा विरोधाभासी विलक्षण चरित्र किसी अन्य आराध्य देव का सम्भव नहीं। उनकी विशिष्टता एवं महादेवत्व इसलिए भी है कि न केवल देवता अपितु मनुष्य, विद्याधर, यक्ष, असुर, नाग, किन्नर, भूत-प्रेतगण सब उनको अपना अराध्य मानते हैं। इसीलिए वह समदर्शी हैं। सृष्टि को अमरत्व प्रदान करते हैं, स्वयं कालकूट विष को जिससे सम्पूर्ण सृष्टि नष्ट हो सकती थी, उसे पीकर अपने कण्ठ में धारण करते हैं। स्वर्ग से निकली गंगा कहीं पाताल लोक में न चली जाये, अपनी जटाओं में समेट कर उसे पृथ्वी पर ही बहने के लिए विवश करते हैं। ऐसे महादेव की संस्तुति न केवल पुराणों तक सीमित है, अपितु वेदों, उपनिषदों तथा आगमों में सर्वत्र दृष्टिगत होती है। इन सभी ग्रन्थों में भगवान शिव के विभिन्न स्वरूपों के ध्यान के साथ उनके परिवार, परिच्छेद, मन्दिर निर्माण, निर्वाण दीक्षा, शिवलिंगों के भेद तथा उनकी पूजा उपासना पर भी प्रकाश डाला गया है।

हिमाचल में भी क्षेत्रदेवता, इष्टदेवता, ग्रामदेवता के रूप में मंदिरों में महादेव विराजमान हैं। कई क्षेत्रों में अन्य कई देवता शिवांश के रूप में पूजे जाते हैं। शक्तिपीठों में भी शिव का सानिध्य प्राप्त है। यहां के ठाकुरद्वारों में भी सर्वत्र शिवलिंग स्थापित हैं। जिला मण्डी, शिमला, किन्नौर, सिरमौर, कुल्लु, सराज, चम्बा तथा हिमाचल प्रदेश के अन्य सभी जिलों में शिव भगवान के मन्दिर विद्यमान हैं, जो स्थानीय जनता की आस्था के केन्द्र हैं। माहेश्वर, मंगलेश्वर सम्भलेश्वर, नागेश्वर, हाटकेश्वर, कोटेश्वर, महासु, शिरगुल, किन्नर कैलाश शिव, श्रीखण्ड, चुड़ेश्वर आदि अनगिनत नामों से महादेव शंकर हिमाचल की भूमि पर विराजमान हैं। आगामी लेखों में शिव मंदिरों और इनसे जुड़ी गाथाओं का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। ◆◆◆

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिलें संस्कार

मातृवन्दना

वर्षः 34 अंक : 02 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश),
माघ-फाल्गुन, कलियुगाब्द 5127, फरवरी 2026

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

संरक्षक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सह सम्पादक
वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹ 15
वार्षिक शुल्क	₹ 150
आजीवन शुल्क	₹ 1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णतः अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

इस अंक में...

संपादकीय	सांस्कृतिक विरासत के स्वाभिमान की शौर्य...	5
चिन्तन	सरस्वती पूजन	6
प्रेरक प्रसंग	वीरता की अद्भुत मिसाल	7
आवरण	भारतीय संस्कृति का जीवंत प्रतीक...	8
	शिवशक्ति अध्यात्म का स्वाभिमान	10
	देवभूमि हिमाचल में शिवरात्रि	11
महिला जगत्	प्रेम एवं वीरता की देवी	12
संगठनम्	हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है	14
नवाचार	हिमाचल की बेटी नितिका बनीं मिसाल	17
देश प्रदेश	...जब हंसता-खेलता शहर ही नहीं	18
लोक संस्कृति	रिश्तों की अनोखी परंपरा	20
देवभूमि	मंडी शिवरात्रि देव मिलन की परम्परा	21
धर्म जागरण	सांस्कृतिक पुनर्जागरण भारतीय युवा...	22
इतिहास	पहाड़ी भिति चित्रों में शिव महिमा...	24
पुण्य स्मरण	सनातन विरासत के आदर्श श्रीगुरू जी	26
व्यक्तित्व	अप्रतिम राष्ट्रभक्त वीर सावरकर	27
युवा पथ	स्वामी विवेकानंद के सपनों का...	28
नशा	नशाखोरी ने लगाया वर्दी पर दाग	29
समसामयिकी	अमेरिका की साम्राज्यवादी नीतियां	30
पंच परिवर्तन	हिमाचल की चोटियों पर घटता हिमपात	32
काव्य जगत्	सूना आंगन, अभी भी वक्त है, शाश्वत प्रेम	33
स्वास्थ्य	भीतर की शांति से बेहतर जीवन	34
बाल जगत्	श्रीराम-भरत का अमर प्रेम	35

अमृत वचन

राष्ट्र केवल भूभाग नहीं, बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक चेतना है। राष्ट्र का निर्माण भूमि, जन और संस्कृति के समन्वय से होता है। भारत की आत्मा उसकी सनातन संस्कृति में निहित है। स्वयंसेवकों को देश के लिए 'मन, तन, और धन' समर्पित करने, कठिन तपस्या और त्याग के साथ कार्य करना चाहिए।
- श्री गुरुजी माधव सदाशिव गोलवलकर

पाठकीय...

महोदय,

जनवरी 2026 का अंक लोकतंत्र का महापर्व गणतंत्र दिवस पर आधारित रहा। यह एक अच्छा प्रयास है। हिमाचल प्रदेश के लिए यह अत्यंत सौभाग्य एवं गर्व की बात है कि भारत के लगभग 21 परमवीर चक्र विजेताओं में तीन नाम हिमाचल प्रदेश के हैं। हिमाचल प्रदेश से मेजर सोमनाथ, राइफलमैन संजय कुमार और कैप्टन विक्रम बत्रा को परमवीर चक्र विजेता होने का सौभाग्य मिला है। उनके सचित्र जीवन वृत्त को इस पत्रिका में स्थान मिलने से हमें बेहतर जानकारी मिल सकी है। वर्तमान केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रपति भवन में अंग्रेजी अधिकारियों के चित्रों को हटाकर उनके स्थान पर परमवीर चक्र विजेताओं के चित्रों को सजाना, राष्ट्र के लिए अत्यंत गौरव की बात है। गणतंत्र दिवस के संबंध में लेख और जानकारियां भी उपयोगी हैं। संविधान निर्माण के इतिहास और संविधान के स्वरूप तथा नागरिकों के अधिकार और कर्तव्यों के संबंध में भी विचार रखे गए हैं। यह पांच परिवर्तनों के अंतर्गत नागरिक कर्तव्य के संबंध में महत्वपूर्ण प्रयास है। पत्रिका में हमेशा की तरह जनवरी माह से संबंधित विभिन्न मेलों पर्व त्योहारों के संबंध में भी जानकारी है और नवीनतम सूचनाओं तथा हिंदू संस्कृति पर आधारित लेख और हिंदू सम्मेलनों के प्रांत भर के आयोजनों की जानकारी पाठकों की रुचि और ज्ञान को बढ़ाने वाली है।

अंजू कुमारी, चंबा, हि.प्र.

महोदय,

जनवरी माह में माघ की पूर्णिमा एवं मकर संक्रांति का त्यौहार पूरे भारतवर्ष में धूमधाम से मनाया जाता है, जिसका अपना सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व है। इस अंक में इससे संबंधित जानकारी पढ़ने को मिली। इसके साथ मातृशक्ति को नमन इस कार्यक्रम के संबंध में 25 मातृ शक्तियों को सम्मानित किया जाना, इस बहुत महत्वपूर्ण आयोजन को भी शामिल किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध पत्रकार रूबीका लियाकत और हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री ठाकुर जय राम जी के विचारों को स्थान देते हुए उन महिलाओं का भी जिक्र किया गया है जिन्होंने अपनी बेटियों के जीवन का निर्माण करने तथा उन्हें अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए संघर्ष किया है, यह कार्यक्रम मातृशक्ति के सम्मान के साथ-साथ सभी के लिए प्रेरणा देने वाला भी है। अध्यात्म वंदना के अंतर्गत एक वेद मंत्र का व्याख्यान करते हुए उसके उपदेश को व्यवहार में अपनाने की प्रेरणा, एक नया प्रयास है। इसके साथ भंगाल रियासत का इतिहास और उसके राजनीतिक संघर्ष का भी लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। इस अंक में आजाद हिंद फौज में हिमाचल के योगदान का उल्लेख करते हुए कैप्टन राम सिंह थापा का भी वर्णन किया जाना हिमाचल को गौरव प्रदान करने वाला है। वर्तमान में हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा चिट्टे पर चोट किए जाने के प्रयास किये जा रहे हैं और इसमें संजीवनी संस्था द्वारा किए गए सकारात्मक प्रयास को भी पत्रिका के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास हुआ है। वीर बाल दिवस के अवसर पर श्री गुरु गोविंद सिंह जी और उनके वीर सपूतों का अमर बलिदान के इतिहास और राष्ट्र के प्रति समर्पण को दर्शाता है। जो आज भी सभी के लिए प्रेरणा देने वाला है। इसके साथ पांच परिवर्तनों के अंतर्गत भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था का चिंतन भी ज्ञानवर्धक है। सिरमौर जिले के एक छोटे से गांव के युवाओं द्वारा सेना में दी जा रही सेवाओं को सचित्र प्रकाशित करना युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हो सकता है। हमारा विश्वास है कि भविष्य में भी पत्रिका के माध्यम से इसी तरह की स्तरीय और उपयोगी तथा ज्ञानवर्धक जानकारी प्रकाशित की जाती रहेगी।

सुनील शर्मा, सोलन, हि.प्र.

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेलः matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को
महाशिवरात्रि की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस फरवरी 2026

माघ पूर्णिमा	01 फरवरी
राष्ट्रीय महिला दिवस	11 फरवरी
महाशिवरात्रि	15 फरवरी
ठाकुर रामसिंह जयंती	15 फरवरी
अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	21 फरवरी
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	28 फरवरी

डॉ. कर्म सिंह
सम्पादक, मातृवन्दना

संपादकीय

सांस्कृतिक विरासत के स्वाभिमान की शौर्य यात्रा

ॐ नमः शिवाय' यह मंत्र भारतीय धर्म, दर्शन, अध्यात्म एवं सांस्कृतिक परंपरा का मूल स्रोत है। सगुण एवं निर्गुण भक्ति में शिव सभी के आराध्य हैं। सृष्टि रचना, पालन और संहार में शिव तत्त्व सर्वोपरि है, अतः शिव शक्ति का दिव्य स्वरूप सभी के लिए कल्याण, सुख, शांति, धन-धान्य और समृद्धि प्रदान करने वाला है।

देव परंपरा में बारह ज्योतिर्लिंग और हिमाचल प्रदेश में शिवधाम एवं पवित्र तीर्थस्थल असंख्य भक्तजनों के मानस में श्रद्धा एवं भक्ति भाव से समाहित हैं। मंदिर हमारी सांस्कृतिक विरासत, आस्था, श्रद्धा, अध्यात्म, योग-साधना, पूजा अर्चना, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रजागरण के प्रमुख केंद्र रहे हैं। जहां सदियों की परतंत्रता और विदेशी विधर्मियों के आक्रमणों के दौरान मंदिरों और पुरातात्विक स्थलों को नष्ट-भ्रष्ट करने के अनेकों प्रयास होते रहे, वहां भारत के धर्म प्रेमी समाज सुधारकों एवं शासकों ने विभिन्न कालखंडों में इन भग्नावशेष मंदिरों, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलों का पुनरुद्धार करते हुए भारतीय सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखा। सोमनाथ मंदिर इसका एक प्रत्यक्ष साक्षी है, जो अनेक आक्रमणों के बाद भी धर्म, अध्यात्म और राष्ट्र आराधना की ध्वजा निरंतर लहराए हुए हैं। भारतीय संस्कृति में शिव शक्ति की आराधना एक ऐसी संजीवनी है, जो हिंदू जनमानस को भक्ति और शक्ति अर्जित करने के लिए प्रेरित करती रही है।

भारत के इतिहास में विगत शताब्दी सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से पुनर्जागरण के लिए विशिष्ट पहचान रखती है। इस कालखंड में भारतीय ज्ञान परंपरा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तथा सामाजिक संरचना के लिए अनेकों सार्थक एवं सफल प्रयास हुए हैं। वैदिक परंपराओं तथा भारतीय ज्ञान विज्ञान की पुनः स्थापना के लिए पुरातात्विक स्थलों का पुनरुद्धार करते हुए अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित बनाए रखने की दिशा में कार्य किया।

भारतीय जनमानस में अपने आराध्य देवी-देवताओं के प्रति अटूट श्रद्धा, भक्ति, आस्था के भाव को नहीं मिटा सके और इस शक्ति के बल पर भारत की सांस्कृतिक विरासत की भव्य इमारत फिर से खड़ी होती रही। भारत की सर्वसमावेशी सांस्कृतिक परंपराओं एवं लोक जीवन में धर्म-अध्यात्म के प्रति गहरा भाव बना रहा। विभिन्न कालखंडों में समाज सुधारकों एवं भारतीयों ने अपनी ज्ञान परंपरा को बनाए रखने के लिए ऐतिहासिक मंदिरों और पुरातात्विक स्थलों का पुनरुद्धार कार्य किया।

वर्तमान में सोमनाथ स्वाभिमान यात्रा के माध्यम से उस सांस्कृतिक विरासत को पुनः स्थापित करने के प्रयास से धर्म और अध्यात्म के भाव की लहर दौड़ गई है, जिसमें हिंदू जनमानस धर्म और अध्यात्म के प्रति आकृष्ट होने लगा है और अपने गौरवपूर्ण इतिहास के संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास करने लगा है। जन आस्था के इस दृष्टिकोण से हमारे प्राचीन मंदिर, मेले, पर्व त्यौहार एक नई ऊर्जा का संचार करते हैं। भारत में शिवशक्ति की आराधना हिंदू संस्कृति में महत्वपूर्ण रही है। अतः हिमालय क्षेत्र की लोक संस्कृति में शिवरात्रि का पर्व धर्म और सामाजिक समरसता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ***शिव कैलाशों के बासी धौलीधारों के राजा। शंकर संकट हरना। और ...बांका मुल्ख हिमाचल तेरी चोटी ऊपर कैलाशो।*** ये भजन एवं लोकगीत हिमाचल प्रदेश के जनमानस में सदियों से रचे-बसे हैं। इसलिए शिव यहां की सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओं में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए हैं और प्रत्येक देवालय तथा घर-घर में पूजित हैं।

अतः मातृवंदना के इस अंक में सोमनाथ के इतिहास के पुनरुद्धार, धार्मिकता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में स्मरण करते हुए स्वाभिमान एवं शौर्य की यात्रा एक नए इतिहास की साक्षी बन रही है। सोमनाथ मंदिर की विरासत और हिमाचल प्रदेश की लोक संस्कृति में व्याप्त शिवरात्रि की परंपराओं पर आधारित सामग्री इसमें प्रस्तुत की जा रही है। इसके साथ अन्य स्थाई स्तंभों के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर जानकारीपूर्ण सामग्री भी उपलब्ध है।

सरस्वती पूजन की परंपरा और वसंत पंचमी

सा मां पातु सरस्वती भगवती, ज्ञानप्रदा शारदा...

भारतीय संस्कृति में विद्या एवं ज्ञान की देवी सरस्वती की उपासना किए जाने की परंपरा है। वसंत पंचमी हिंदू धर्म में एक प्रमुख पर्व है, जिसे ज्ञान, विद्या और कला की देवी मां सरस्वती के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को आती है। इस दिन सरस्वती पूजन की प्राचीन परंपरा निभाई जाती है, जो शिक्षा, संगीत, चित्रकला और साहित्य से जुड़ी है। वसंत पंचमी को सरस्वती जयंती, वागीश्वरी जयंती या मौन पंचमी भी कहा जाता है। यह पर्व बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है, जब प्रकृति फूलों से सुशोभित हो उठती है।

> **वसंत पंचमी हमें सिखाती है कि ज्ञान और संस्कार से ही समाज सशक्त बनता है। मां सरस्वती की कृपा से विवेक, शुद्ध विचार और सेवा भावना विकसित होती है। आइए, हम शिक्षा को जीवन का आधार बनाकर जागरूक, समरस और संस्कारित समाज का निर्माण करें।**

ऐतिहासिक और पौराणिक मतों के अनुसार, मां सरस्वती ब्रह्मा जी की मानस पुत्री हैं और वे त्रिदेवी लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती में ज्ञान की देवी हैं। ब्रह्मांड सृष्टि के समय ब्रह्मा जी ने वेदों का उच्चारण किया, लेकिन भाषा की कमी से सृष्टि अधूरी रही। तब सरस्वती प्रकट हुईं और वाणी प्रदान की। वसंत पंचमी को उनका जन्मदिन माना जाता है। महाभारत और अन्य ग्रंथों में भी सरस्वती पूजन का उल्लेख है। इस परंपरा की जड़ें वैदिक काल में हैं। ऋग्वेद में सरस्वती को विद्या की देवी तथा नदी के रूप में पूजा जाता था, जो ज्ञान का स्रोत थी।

सरस्वती पूजन की विधि और परंपराएं :

वसंत पंचमी की सुबह स्नान कर स्वच्छ एवं पीले वस्त्र धारण किए जाते हैं। घर या मंदिर में सरस्वती की मूर्ति या चित्र स्थापित किया जाता है। पूजन सामग्री में पीला वस्त्र, पीले फूल, दूध, दही, मिश्री का भोजन, कलम-दवात, पुस्तकें और वाद्ययंत्र रखे जाते हैं। पीला रंग सरस्वती का प्रिय माना जाता है, जो वसंत के फूलों से जुड़ा है। सरस्वती सूक्त, सरस्वती चालीसा का पाठ किया जाता है। मंत्र: ओम ऐं सरस्वत्यै नम: का जाप करते हुए अभिषेक, आरती और भोग लगाया जाता है। यह 'विद्या आरंभ' संस्कार है। इस दिन स्कूलों में विशेष पूजन होता है, जहां बच्चे कलम-खोलने की रस्म निभाते हैं। विवाह योग्य कन्याएं भी पूजन करती हैं। बसंत पंचमी एवं सरस्वती पूजन का पर्व भारतवर्ष के सभी प्रांतों में भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाया जाता है। पश्चिम बंगाल में वासन्ती पूजा भव्य रूप से होती है। गुजरात में सरस्वती कवच चढ़ाया जाता है। उत्तर भारत में पीले-पीले व्यंजन जैसे-केसरिया खीर, हलवा बनाए जाते हैं। कुछ क्षेत्रों में मौन व्रत रखा जाता है। पूजा के साथ सरस्वती पूजन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि शैक्षिक परंपरा का प्रतीक है। यह विद्यार्थियों को प्रेरित करता है कि ज्ञान ही जीवन का आधार है। आधुनिक युग में भी विद्यारम्भ से पहले इनका पूजन प्रचलित है। वसंत पंचमी पर कवि सम्मेलन, संगीत कार्यक्रम और सांस्कृतिक आयोजन होते हैं। यह पर्व पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देता है, क्योंकि बसंत नई ऊर्जा का प्रतीक है। लोकमान्य तिलक ने इसे स्वराज आंदोलन से जोड़ा था। वसंत पंचमी हमें सिखाती है कि सरस्वती की कृपा से ही जीवन सफल होता है। इसी की उपासना से ज्ञान की प्राप्ति होती है। इस प्रकार वसंत पंचमी सरस्वती पूजन तथा विद्या एवं ज्ञान प्राप्ति तथा भारतीय संस्कृति की परंपराओं को श्रद्धा एवं भक्ति से निभाए जाने का पवित्र दिन माना जाता है।◆◆◆

वीरता की अद्भुत मिसाल
वीर हकीकत राय का बलिदान

परवाह नहीं जो जान भी जाए तो गम नहीं।
मरना धर्म के वास्ते जीने से कम नहीं।।

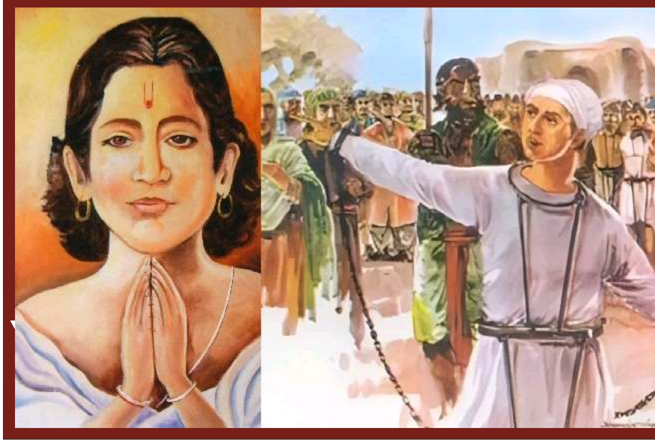

वीर हकीकत का बलिदान भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में अंकित है। भारतीय इतिहास में वीर हकीकत राय का नाम धर्म, साहस और आत्मबलिदान का अमर प्रतीक है। वे अठारहवीं शताब्दी के उस दौर के बालवीर थे, जब मुगल शासन के अंतर्गत धार्मिक असहिष्णुता और सामाजिक तनाव व्याप्त थे। हकीकत राय का बलिदान यह दर्शाता है कि सच्चे विश्वास और आत्म सम्मान के लिए आयु बाधा नहीं बनती, उसके लिए देशभक्ति का संकल्प होना चाहिए।

वीर हकीकत राय का जन्म सन् 1719 ई. के लगभग सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में एक हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम भागमल था, जो एक साधारण किंतु धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। हकीकत राय बचपन से ही तीव्र बुद्धि, तेजस्वी व्यक्तित्व और सत्यनिष्ठ स्वभाव के बालक थे। वे फ़ारसी भाषा सीखने के लिए मदरसे में अध्ययन करते थे, जहां हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बच्चे पढ़ते थे। एक बार जब विद्यालय में कुछ मुस्लिम छात्रों ने हिंदू देवी-देवताओं के प्रति अपमानजनक शब्द कहे। वीर हकीकत राय ने इसका विरोध किया और अपने धर्म के सम्मान की रक्षा के लिए स्पष्ट शब्दों में इसका प्रतिवाद किया। इसी दौरान विवाद बढ़ गया और उन पर इस्लाम के विरुद्ध अपशब्द कहने का झूठा आरोप लगा दिया गया। उस समय भी इस प्रकार के आरोप अत्यंत गंभीर माने जाते थे और प्रायः उनका दंड मृत्यु होता था।

मामला स्थानीय काजी और बाद में लाहौर के नवाब जकरिया खाँ के दरबार तक पहुंचा। हकीकत राय पर दबाव डाला गया कि वे इस्लाम स्वीकार कर लें, जिससे उनका जीवन बच सकता था। उन्हें धन, पद और सुख-सुविधाओं का भी लालच दिया गया। किंतु मात्र 14 वर्ष की आयु में हकीकत राय ने अद्भुत साहस का परिचय देते हुए स्पष्ट कहा कि वे अपने धर्म और आस्था से समझौता नहीं करेंगे। उनके लिए धर्म परिवर्तन की अपेक्षा मृत्यु अधिक स्वीकार्य थी। कहा जाता है कि जब उन्हें अंतिम बार धर्म बदलने एवं इस्लाम को स्वीकार करने का अवसर दिया गया, तब उन्होंने निर्भीक स्वर में कहा-'धर्म आत्मा का आधार है, इसे छोड़कर जीवन व्यर्थ है।' यह वाक्य उनके अटूट विश्वास और आध्यात्मिक दृढ़ता को प्रकट करता है। अंततः सन् 1734 ई. में लाहौर में उन्हें मृत्यु दंड दे दिया गया। इस प्रकार एक बालक ने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

वीर हकीकत राय का बलिदान केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का स्रोत है। उनके बलिदान ने तत्कालीन हिंदू समाज में आत्मगौरव और धर्मरक्षा की भावना को सुदृढ़ किया है। इस प्रकार वीर हकीकत राय का जीवन यह सिखाता है कि सच्चाई, आत्मसम्मान और धर्म के लिए दिया गया बलिदान युगों तक प्रेरणा देता रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को साहस, श्रद्धा और अडिग विश्वास का मार्ग दिखाता रहेगा।◆◆◆

हितेन्द्र शर्मा को उत्कृष्ट लेखन के लिए राज्यपाल द्वारा 'अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस'

हिमाचल के प्रख्यात कवि, पत्रकार एवं साहित्यकार तथा जागरण पत्रिका मातृवंदना संपादक टोली में शामिल अग्रणी लेखक हितेन्द्र शर्मा को हिन्दी साहित्य और लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान सर्वपल्ली राधाकृष्णन कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बलना (नोगली) द्वारा आयोजित डिग्री पाठ्यक्रमों के उद्घाटन समारोह के अवसर पर हिमाचल के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल द्वारा प्रदान किया गया। समारोह में शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति जगत से जुड़े अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

भारतीय संस्कृति का जीवंत प्रतीक सोमनाथ मंदिर

डॉ. अवनीश कुमार

सोमनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि वह भारतीय सभ्यता की जीवटता, सांस्कृतिक निरंतरता और आत्मगौरव का सजीव प्रतीक है। गुजरात के प्रभास पाटन में अरब सागर के तट पर स्थित यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम माना जाता है। इतिहास पर दृष्टि डालें तो हम पाते हैं कि सोमनाथ मंदिर को लगभग सत्रह बार तोड़ा गया। लेकिन जितनी बार आक्रमणकारी शक्तियां आईं, हिंदू समाज ने इसका पुनर्निर्माण और अधिक भव्यता के साथ किया। इतिहास के अनेक झंझावातों, आक्रमणों और विध्वंस के बावजूद सोमनाथ का बार-बार पुनर्निर्माण यह सिद्ध करता है कि भारतीय संस्कृति को दबाया जा सकता है, पर समाप्त नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि सोमनाथ मंदिर भारत की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना की कथा का केंद्रबिंदु बन जाता है। राजा भीमदेव, कुमारपाल और अहिल्याबाई होल्कर जैसे शासकों ने इसे बार-बार जीवित किया। ज्योतिर्लिंग का अर्थ है-निराकार से साकार की यात्रा। शैव दर्शन में शिव संहार नहीं, रूपांतरण के प्रतीक हैं-जो सोमनाथ के बार-बार पुनर्निर्माण से सीधे जुड़ता है। सोमनाथ का ज्योतिर्लिंग होना हिन्दू दर्शन की उस अवधारणा को प्रकट करता है, जहाँ विनाश अंत नहीं, बल्कि नवसृजन की भूमिका होता है। हिन्दू संस्कृति में प्रकृति और देवत्व का गहरा संबंध है। समुद्र तट पर शिव मंदिर-जल, आकाश और भूमि का संगम। यह प्रकृति-सम्मत जीवन दृष्टि को दर्शाता है। सोमनाथ का समुद्र के तट पर स्थित होना हिन्दू संस्कृति के प्रकृति-पूजन और संतुलन की भावना को अभिव्यक्त करता है।

इतिहास के आघात और संस्कृति की जिजीविषा : सोमनाथ मंदिर का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना भारतीय सभ्यता का गौरव। यह मंदिर सदियों तक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का केंद्र रहा। विदेशी आक्रमणों के दौरान इस मंदिर को कई बार ध्वस्त किया गया, विशेषकर ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी द्वारा किए गए आक्रमण ने इसे इतिहास में एक प्रतीकात्मक स्थान दिलाया। किंतु प्रत्येक विध्वंस के बाद भारतीय समाज ने न केवल इस मंदिर का पुनर्निर्माण किया, बल्कि अपने आत्मबल और सांस्कृतिक चेतना को भी पुनर्जीवित किया। यह तथ्य अत्यंत महत्वपूर्ण है कि सोमनाथ के पुनर्निर्माण केवल सत्ता या शासकों की इच्छा से नहीं हुए, बल्कि जनमानस की सांस्कृतिक प्रतिबद्धता से संभव हुए। हिन्दू संस्कृति में तीर्थ केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद केंद्र रहे हैं। सोमनाथ पश्चिम में, बद्रीनाथ उत्तर में, रामेश्वरम दक्षिण में-चारधाम और द्वादश ज्योतिर्लिंग भारत को सांस्कृतिक रूप से जोड़ते हैं। सोमनाथ केवल गुजरात का नहीं, सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा है। हिन्दू संस्कृति रैखिक इतिहास नहीं, बल्कि चक्राकार कालबोध में विश्वास करती है। सृष्टि-स्थिति-लय-पुनर्सृजन का सिद्धांत। सोमनाथ का बार-बार ध्वंस और पुनर्निर्माण इसी सनातन कालचक्र का मूर्त उदाहरण है। सोमनाथ मंदिर का इतिहास हिन्दू कालबोध का स्थापत्य रूप है, जहाँ पतन के बाद पुनरुत्थान अनिवार्य है। मंदिर का हर पुनर्निर्माण इस बात का प्रमाण है कि भारतीय समाज के लिए संस्कृति केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा है।

स्वतंत्र भारत और सांस्कृतिक पुनर्जागरण : स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने केवल राजनीतिक एकीकरण की चुनौती नहीं थी, बल्कि सांस्कृतिक आत्मविश्वास के पुनर्निर्माण की भी आवश्यकता थी। इसी संदर्भ में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण एक ऐतिहासिक निर्णय बनकर सामने आया। सरदार वल्लभभाई पटेल ने इसे राष्ट्र की सांस्कृतिक पुनर्स्थापना का प्रश्न माना। यह केवल एक मंदिर का निर्माण नहीं था, बल्कि 1000 वर्षों की गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अनुष्ठान था। उन्होंने इसे सरकारी नहीं, बल्कि जन-सहयोग से बनाने का निर्णय लिया। उनके संकल्प और नेतृत्व में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण आरंभ हुआ, जिसे राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1951 में राष्ट्र को समर्पित किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद के उद्घाटन भाषण में निहित विचार आज भी प्रासंगिक हैं-कि कोई भी राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कटकर प्रगति नहीं कर सकता। स्वतंत्र भारत में सोमनाथ का पुनर्निर्माण यह स्पष्ट संदेश था कि आधुनिक भारत अपनी परंपराओं से विमुख नहीं है, बल्कि उन्हें आत्मसात कर आगे बढ़ना चाहता है।

स्थापत्य और प्रतीकात्मकता : सोमनाथ मंदिर की वास्तुकला चालुक्य शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। मंदिर का शिखर, गर्भगृह और सभा मंडप भारतीय स्थापत्य कला की उच्च परंपरा को दर्शाते हैं। अरब सागर के किनारे स्थित यह मंदिर भौगोलिक दृष्टि से भी प्रतीकात्मक है-यह भारत की पश्चिमी सीमा पर खड़ा होकर मानो सदियों से सांस्कृतिक प्रहरी की भूमिका निभा रहा है। मंदिर में स्थापित 'बाण स्तंभ', जिस पर यह अंकित है कि सोमनाथ से दक्षिण ध्रुव तक कोई भूमि नहीं है, केवल भौगोलिक संकेत नहीं देता, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा और वैज्ञानिक चेतना का भी परिचायक है। इस प्रकार सोमनाथ केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि ज्ञान, कला और संस्कृति का संगम है। मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं, सामाजिक संस्था भी रहे हैं। प्राचीन हिन्दू मंदिर शिक्षा केंद्र, कला और संगीत के आश्रय, समाज सेवा के केंद्र रहे हैं। सोमनाथ भी इसी परंपरा का अंग रहा है। हिन्दू मंदिर परंपरा में सोमनाथ जैसे स्थल समाज के सांस्कृतिक मेरुदंड रहे हैं।

समकालीन भारत और सोमनाथ : इक्कीसवीं सदी के भारत में सोमनाथ मंदिर को नई दृष्टि से देखा जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और उसे समकालीन संदर्भों से जोड़ने का प्रयास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके कार्यकाल में सोमनाथ मंदिर और प्रभास पाटन क्षेत्र का समग्र विकास हुआ है। मंदिर परिसर का सुव्यवस्थित विस्तार, श्रद्धालुओं के लिए आधुनिक सुविधाएँ और सांस्कृतिक परिदृश्य का संरक्षण इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। यह विकास किसी एक धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा है जिसमें भारत अपनी सांस्कृतिक धरोहर को राष्ट्रीय पहचान के रूप में प्रस्तुत करता है। सोमनाथ का विकास 'विरासत भी, विकास भी' की अवधारणा को मूर्त रूप देता है, जहाँ अतीत का सम्मान और वर्तमान की आवश्यकताएँ साथ-साथ चलती हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन और राष्ट्रीय चेतना : सोमनाथ मंदिर आज भारत के सांस्कृतिक पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालु और पर्यटक यहाँ केवल पूजा के लिए नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक यात्रा को समझने के लिए भी आते हैं। इससे न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिला है, बल्कि भारतीय संस्कृति की वैश्विक छवि भी सुदृढ़ हुई है। हिन्दू संस्कृति लिखित इतिहास के साथ-साथ स्मृति और परंपरा पर आधारित है। सोमनाथ केवल शिलालेखों में नहीं, बल्कि लोककथाओं, पुराणों और जनस्मृति में जीवित रहा। सोमनाथ का अस्तित्व इतिहास से अधिक स्मृति में सुरक्षित रहा—और यही हिन्दू संस्कृति की सबसे बड़ी शक्ति है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा सांस्कृतिक स्थलों को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने का प्रयास यह संकेत देता है कि संस्कृति को केवल संग्रहालयों तक सीमित नहीं रखा जा सकता। उसे जीवंत बनाए रखने के लिए समाज, शासन और नागरिकों की साझा भूमिका आवश्यक है। सोमनाथ इस साझा उत्तरदायित्व का सशक्त उदाहरण है। सोमनाथ का पुनर्निर्माण प्रतिशोध का नहीं, पुनर्स्थापना का प्रतीक है। हिन्दू संस्कृति में संघर्ष के बाद भी पुनर्निर्माण पर बल दिया जाता है। सोमनाथ की पुनर्स्थापना प्रतिकार नहीं, आत्मगौरव की शांत अभिव्यक्ति है।

आस्था, पहचान और भविष्य : आज जब वैश्वीकरण के दौर में सांस्कृतिक एकरूपता का दबाव बढ़ रहा है, तब सोमनाथ जैसे स्थल अपनी विशिष्ट पहचान के साथ खड़े होने का साहस देते हैं। यह मंदिर हमें यह स्मरण कराता है कि विकास का अर्थ जड़ों से कटना नहीं है। आस्था और आधुनिकता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे की पूरक हो सकती हैं। हिन्दू संस्कृति में व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अलग नहीं। सोमनाथ का पुनर्निर्माण जनसहभागिता और सामूहिक भावना से हुआ। सोमनाथ मंदिर हिन्दू संस्कृति की उस एकात्म चेतना का प्रतीक है, जहाँ व्यक्ति अपनी आस्था के माध्यम से राष्ट्र की आत्मा से जुड़ता है। सोमनाथ मंदिर का संदेश स्पष्ट है—संस्कृति तब तक जीवित रहती है, जब तक समाज उसे अपनी चेतना में स्थान देता है। पुनर्निर्माण केवल पत्थरों का नहीं होता, बल्कि मूल्यों, आत्मसम्मान और सामूहिक स्मृति का भी होता है।

सोमनाथ मंदिर भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना का शाश्वत प्रतीक है। यह मंदिर इतिहास के घावों, स्वतंत्रता के संकल्प और आधुनिक भारत की सांस्कृतिक दृष्टि—तीनों को एक सूत्र में बाँधता है। सरदार पटेल के संकल्प से लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हुए समग्र विकास तक, सोमनाथ की यात्रा यह दर्शाती है कि जब राष्ट्र अपनी सांस्कृतिक आत्मा को पहचानता है, तब वह केवल अतीत का सम्मान नहीं करता, बल्कि भविष्य की नींव भी मजबूत करता है। इसी अर्थ में सोमनाथ मंदिर केवल एक धार्मिक धरोहर नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के आत्मविश्वास, निरंतरता और पुन:स्थापना का जीवंत घोष है।◆◆◆

शिवशक्ति, अध्यात्म का स्वाभिमान सोमनाथ मंदिर एवं भव्य शौर्य यात्रा

डॉ. कर्म सिंह

भारत वैदिक एवं पौराणिक काल से ही ऋषियों मुनियों के अध्यात्म, साधना, शिवशक्ति की आराधना और दिव्य सांस्कृतिक विरासत की भूमि है। भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान, विज्ञान, कर्म और उपासना का अद्भुत समन्वय है, जहां असंख्य पूजित देवी देवताओं के भव्य मंदिर भी स्थापित हैं, जिनमें मूर्ति कला, वास्तु एवं स्थापत्य कला दर्शनीय है। मंदिर हिंदुओं की धार्मिक एवं सांस्कृतिक श्रद्धा एवं आस्था के केंद्र होने से धन संपत्ति से संपन्न रहे हैं। इसी कारण मुस्लिम आक्रमणकारियों ने भारत के मंदिरों को तोड़कर सोना, चांदी, हीरे जवाहरात और अन्य बहुमूल्य संपत्ति को लूटकर अपने देश पहुंचाया। क्योंकि इन मंदिरों के प्रति हिंदुओं की अगाध श्रद्धा हमेशा बनी रही, अत: इनका तत्कालीन राजाओं एवं शासकों द्वारा पुनर्निर्माण भी करवाया जाता रहा और मंदिरों में धन-धान्य की संपन्नता, अध्यात्म तथा भक्तिभावना भी बनी रही। राष्ट्र चेतना को जीवंत बनाए रखने के लिए अपने गौरवपूर्ण स्वर्णिम इतिहास का स्मरण आवश्यक है। यद्यपि विदेशी आक्रमणकारियों ने समय-समय पर भारत की सांस्कृतिक विरासत को नष्ट-भ्रष्ट करने का प्रयास किया गया। मंदिरों को तोड़ा गया। भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक विरासत को मिटाने के भी षड्यंत्र रचे गए। परंतु सनातन धर्म लोकमानस में प्रवाहित होता रहा और पीढ़ी दर पीढ़ी अपना इतिहास, संस्कार, परंपराएं और सभ्याचार निरंतर गतिशील होता रहा। भारतीय राजाओं, शासकों और सामान्य भक्तों ने सामूहिक रूप से अपने मंदिरों का जीर्णोद्धार करके अपने आराध्य को पुन: स्थापित किया और अपनी नष्ट हुई पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक विरासत को फिर से एक नया एवं भव्य रूप प्रदान किया। इसी श्रृंखला में एक सर्वप्राचीन मंदिर है- सोमनाथ।

सोमनाथ मंदिर, गुजरात के प्रभास पाटन में अरब सागर के तट पर स्थित, भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में प्रथम और सबसे प्राचीन है। सोमनाथ भगवान शिव का वह स्वरूप है, जो चंद्रमा के नाथ के रूप में पूजे जाते हैं। वर्तमान मंदिर की वास्तुकला चालुक्य या कैलास महामेरु प्रसाद शैली में निर्मित है, जिसमें गर्भगृह, सभामंडप और नृत्यमंडप शामिल हैं। इसका शिखर 155 फुट ऊँचा है। मंदिर के निर्माण में भारी पत्थरों का उपयोग किया गया है, जो इसे मजबूत और भव्य बनाता है। इसकी छत पिरामिडाकार है, जिसमें सुंदर नक्काशीदार खंभे और दीवारें हैं। शिवलिंग गर्भगृह में स्थापित है। मंदिर में पहले के निर्माण सोने, चांदी और लकड़ी से चंद्र, रावण और भगवान कृष्ण द्वारा किए गए माने जाते हैं। सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार में अहिल्याबाई होलकर सहित अनेक राजाओं तथा समाज सुधारकों का योगदान प्रमुख रहा।

सोमनाथ स्वाभिमान शौर्य यात्रा : भारत की पावन भूमि गुजरात में स्थित सोमनाथ केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति और शौर्य का अमर प्रतीक है। यही वह स्थान है जहाँ इतिहास ने अनेक बार आघात किए, परंतु हर बार राष्ट्र की आत्मा ने पुन: उठकर अपने अस्तित्व और स्वाभिमान को सिद्ध किया। सोमनाथ में आयोजित शौर्य यात्रा इसी अविचल संकल्प, राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्ति है। यह यात्रा अतीत की पीड़ा को स्मरण कर वर्तमान को सशक्त बनाने और भविष्य के लिए आत्मविश्वास जगाने का माध्यम बनती है।

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। यह मंदिर केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं रहा, बल्कि भारतीय कला, स्थापत्य और आध्यात्मिक चेतना का भी प्रतीक रहा है। इतिहास में विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा इस मंदिर पर बार-बार आक्रमण किए गए, उसे ध्वस्त किया गया, किंतु हर बार भारतवासियों ने उसे पुन: निर्मित कर यह संदेश दिया कि धर्म, संस्कृति और आत्मसम्मान को नष्ट नहीं किया जा सकता। सोमनाथ में शौर्य यात्रा इसी ऐतिहासिक संघर्ष और पुनर्निर्माण की परंपरा से प्रेरित है। शौर्य यात्रा का मूल उद्देश्य केवल किसी घटना का स्मरण करना नहीं, बल्कि समाज में राष्ट्रबोध, संस्कृति के प्रति गर्व और आत्मसम्मान की भावना को जागृत करना है। मंदिर के शिखर पर लहराता ध्वज, समुद्र की गर्जना और भक्तों का जयघोष, यात्रा में पारंपरिक वेशभूषा में लोग, हाथों में भगवा ध्वज और तिरंगा तथा राष्ट्रप्रेरक संदेशों वाली पट्टिकाएँ स्वाभिमान यात्रा के विशेष आकर्षण बन रहे। शौर्य यात्रा में समाज के हर वर्ग की सहभागिता देखने को मिलती है। साधु-संत, विद्यार्थी, युवा, महिलाएँ, सामाजिक संगठन, पूर्व सैनिक और आम नागरिक सभी एक साथ कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। यह दृश्य अपने आप में राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का सशक्त संदेश देता है। ◆◆◆

देवभूमि हिमाचल में शिवरात्रि पर्व

हितेन्द्र शर्मा

हिमालय की विराट पर्वत-श्रृंखलाओं में बसी देवभूमि हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक चेतना में शिवरात्रि केवल एक पर्व या धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि सदियों से प्रवाहित होती आस्था, लोकविश्वास और सामूहिक स्मृति का जीवंत उत्सव है। यहाँ शिव किसी दूरस्थ, अलौकिक सत्ता के रूप में नहीं बल्कि लोकजीवन के संरक्षक, न्यायकारी, साक्षी और सहचर देव के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यही कारण है कि हिमाचल में शिवरात्रि का स्वरूप देश के अन्य क्षेत्रों से भिन्न, अधिक व्यापक, सहभागितामूलक और सांस्कृतिक रूप से गहन दिखाई देता है। यह पर्व हिमाचल के समाज, इतिहास और प्रकृति के साथ शिव के अविभाज्य संबंध को प्रकट करता है।

पुराणों और लोककथाओं में हिमालय को शिव का निवास माना गया है। कैलाश पर्वत से लेकर हिमाचल की दुर्गम पहाड़ियों, घाटियों और नदियों तक शिव-तत्त्व का प्रतीकात्मक और भावनात्मक विस्तार स्पष्ट दिखाई देता है। हिमाचल प्रदेश में फैले बैजनाथ, बिजली महादेव जैसे असंख्य शिवालय, शिवगुफाएँ और असंख्य ग्राम देवालय इस बात के साक्ष्य हैं कि शिव यहाँ केवल मंदिरों तक सीमित नहीं हैं बल्कि नदी, पर्वत, वन, खेत और जनमानस में समाहित हैं। शिव यहाँ प्रकृति की शक्तियों के साथ एकाकार दिखाई देते हैं कहीं वे जल के रूप में पूजे जाते हैं, कहीं अग्नि, वायु और आकाश के प्रतीक के रूप में। महाशिवरात्रि इसी सर्वव्यापी शिव-तत्त्व के जागरण और स्मरण का पर्व है।

फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाई जाने वाली महाशिवरात्रि को हिमाचल में अत्यंत पवित्र और अर्थपूर्ण माना जाता है। उपवास, रात्रि जागरण और मौन के माध्यम से यह पर्व संयम, आत्मचिंतन और साधना का अवसर प्रदान करता है। इस दिन गाँव-गाँव के शिव मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना जलाभिषेक, दूध, दही, शहद और घृत से अभिषेक, बेलपत्र, धतूरा और भांग अर्पण की परंपरा गहरे प्रतीकात्मक अर्थ लिए हुए है। ये सभी तत्व प्रकृति से जुड़े हैं।

हिमाचल प्रदेश में शिवरात्रि का सबसे विराट, संगठित और ऐतिहासिक स्वरूप छोटी काशी मंडी में देखने को मिलता है। यह उत्सव धार्मिक आस्था के साथ-साथ राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास को भी अपने भीतर समेटे हुए है। राज देवता माधोराय की शाही जलेब से आरंभ होने वाली यह परंपरा आज भी उसी गरिमा, अनुशासन और विधिविधान के साथ निभाई जाती है। आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों देवी-देवताओं का मंडी पहुँचना हिमाचल की विशिष्ट देवसंस्कृति का जीवंत उदाहरण है। पालकियों में विराजमान देवी-देवता, उनके साथ चलने वाले पुजारी, कारदार, ढोल-नगाड़ों और रणसिंघों की गूंज ये सभी मिलकर एक ऐसे लोकधार्मिक वातावरण का निर्माण करते हैं।

मंदिरों तक पैदल यात्राएँ, सामूहिक पूजा और गगनभेदी जयकारे शिव और मानव के गहरे संबंध को प्रकट करते हैं। शिमला, सिरमौर, किन्नौर और ऊपरी शिमला क्षेत्रों में शिवरात्रि की रात घरों में भी विधिपूर्वक पूजा की जाती है। सामूहिक भंडारे, दान-पुण्य और लोकमेलों के माध्यम से यह पर्व सेवा, सह-अस्तित्व और सांझी संस्कृति का संदेश देता है। लोकनृत्य, पारंपरिक वाद्य यंत्रों की धुन, मेलों में सजी हस्तकला और स्थानीय व्यंजन शिवरात्रि को एक जीवंत सांस्कृतिक उत्सव में बदल देते हैं। यहां धर्म जीवन से अलग नहीं बल्कि जीवन की लय में रचा-बसा दिखाई देता है। शिव को यहां संहारक नहीं बल्कि संतुलन के देव के रूप में देखा जाता है जो योगी भी हैं और गृहस्थ भी, तपस्वी भी हैं। हिमाचल के गाँवों में शिवरात्रि आज भी उसी श्रद्धा, अनुशासन और लोकभावना के साथ मनाई जाती है, जैसी पीढ़ियों पहले मनाई जाती थी। यही निरंतरता हिमाचल की सांस्कृतिक शक्ति और पहचान है। शिवरात्रि इसी जीवंत परंपरा का उत्सव है जहाँ आस्था, इतिहास, प्रकृति और संस्कृति एक-दूसरे में विलीन होकर हिमाचल की विशिष्ट पहचान रखते हैं।◆◆◆

'प्रेम एवं वीरता की देवी'
चंबा की राजकुमारी माता सुशील कौर

विनोद भावुक

माता सुशील कौर का जीवन भारतीय इतिहास के उस उज्ज्वल अध्याय का प्रतिनिधित्व करता है, जहां नारी केवल सहचरी नहीं, बल्कि संघर्ष, संकल्प और बलिदान की धुरी रही है। चंबा रियासत की राजकुमारी होते हुए भी उन्होंने राजसी सुख-सुविधाओं से ऊपर उठकर धर्म, न्याय और आत्मसम्मान के पथ को चुना। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि वीरता केवल रणभूमि में तलवार उठाने तक सीमित नहीं होती, बल्कि धैर्य, सहनशीलता और नैतिक दृढ़ता में भी उतनी ही प्रखर होती है। बंदा सिंह बहादुर के संघर्ष में माता सुशील कौर की भूमिका एक मूक दर्शक की नहीं, बल्कि एक सजग सहभागी की रही। गुरदास नंगल के किले में घेराबंदी के दौरान उन्होंने जिस साहस से भुखमरी, रोग और भय का सामना किया, वह उन्हें असाधारण बनाता है। अपने पति की शहादत और अपने मासूम पुत्र के अमानवीय वध को देखने के बाद भी उनका न टूटना, इतिहास में दुर्लभ उदाहरण है।

उनका संभावित आत्मबलिदान – चाहे उसे जौहर की परंपरा से जोड़ा जाए या कारावास में प्राण त्याग से इस बात का प्रतीक है कि उन्होंने अपमान और जबरन आत्मसमर्पण की अपेक्षा मृत्यु को वरण करना उचित समझा। यही आत्मसम्मान भारतीय क्षत्रिय और सिख परंपराओं की साझा चेतना को दर्शाता है।

माता सुशील कौर न केवल चंबा की गौरवशाली विरासत हैं, बल्कि सिख इतिहास में भी त्याग और संकल्प की अमिट प्रतीक हैं। उनका जीवन आज की पीढ़ी को यह संदेश देता है कि साहस लिंग या परिस्थिति का मोहताज नहीं होता। वे प्रेम और वीरता की सजीव प्रतिमूर्ति हैं, जिनकी स्मृति भारतीय इतिहास को नैतिक ऊँचाई प्रदान करती है।◆◆◆

पद्मश्री ललिता वकील ने चंबा रुमाल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिलाई पहचान
राष्ट्रपति ने जनवरी 2026 के समारोह में किया आमंत्रित

हिमाचल प्रदेश अपनी पारंपरिक लोक कलाओं एवं हस्तकला के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। चंबा रुमाल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने में ललिता वकील का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ललिता वकील हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले की प्रसिद्ध हस्तशिल्पी हैं, जिन्हें चंबा रुमाल कढ़ाई को देश-विदेश में नई पहचान दिलाने के लिए पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया है। उनका जन्म 14 अप्रैल 1954 को चंबा के सपड़ी मोहल्ला में एक साधारण परिवार में हुआ था। ललिता वकील ने 1970 में चंबा से उच्च शिक्षा प्राप्त की और 1978-80 में आईटीआई चंबा से डिप्लोमा हासिल किया। बचपन से ही चंबा रुमाल की कला के प्रति आकर्षित होकर उन्होंने इसके संरक्षण का संकल्प लिया। उन्होंने चंबा रुमाल को वैश्विक मंच पर पहुंचाया, जैसे 2006 में जर्मनी की प्रदर्शनी और 2011 में कनाडा के ट्यूलिप फेस्टिवल में भाग लिया। घर-घर जाकर महिलाओं व लड़कियों को यह कला सिखाई, जिससे कई परिवार आजीविका चला रहे हैं। गरीब बच्चों की शिक्षा में भी सहयोग करती रहीं। उन्होंने अनेक लड़कियों को चंबा रुमाल का प्रशिक्षण देकर कढ़ाई के कार्य में पारंगत बनाया है। चंबा रुमाल में विशेष योगदान के लिए ललिता को अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हो चुके हैं। 2022 में पद्मश्री प्राप्त करने से पहले 1993 में राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा, 2012 में प्रणब मुखर्जी से शिल्प गुरु सम्मान और 2018 में नारी शक्ति पुरस्कार मिला। 26 जनवरी 2026 में गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित होकर चंबा का प्रतिनिधित्व किया। ललिता वकील को चंबा रुमाल कला के संरक्षण और प्रचार के लिए कई प्रमुख पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। वर्ष 2009 में शिल्प गुरु पुरस्कार और 2017 में अंतर्राष्ट्रीय क्राफ्ट अवार्ड महिला गुरु श्रेणी में पाया। 2018 में नारी शक्ति पुरस्कार, राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद द्वारा दिया गया।2022 में पद्मश्री पुरस्कार, कला क्षेत्र में योगदान के लिए प्राप्त करके उन्होंने चंबा एवं हिमाचल प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। ◆◆◆

नारी शक्ति

की साधना से संस्कारित समाज

राष्ट्र सेविका समिति, हिमाचल प्रांत द्वारा जिला शिमला, सोलन (सोलन, परवाणु), सिरमौर (नाहन), नालागढ़ तथा मंडी में मकर संक्रांति उत्सव एवं सूर्य नमस्कार महायज्ञ कार्यक्रमों का आयोजन 18 जनवरी को शाखा स्तर पर बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। इन कार्यक्रमों में समिति की सभी सेविका बहनों ने समाज से आमंत्रित मातृशक्ति के साथ मिलकर सूर्य नमस्कार महायज्ञ में अपनी आहुतियां अर्पित कीं।

जिला शिमला में आर्य समाज संस्थान में आयोजित मकर संक्रांति उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सुशीला लूथरा तथा मुख्य वक्ता के रूप में जिला कार्यवाहिका श्रीमती अनुराधा सुफल जी उपस्थित रहीं। मुख्य अतिथि डॉ. सुशीला लूथरा ने अपने संदेश में कहा कि नारी शक्ति ही समाज की धुरी है, जो संस्कार और संस्कृति का विस्तार अत्यंत प्रभावी रूप से कर रही है। ऐसे कार्यक्रम वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक हैं, ताकि त्योहारों, रीति-रिवाजों और परंपराओं का ज्ञान भावी पीढ़ी तक पहुंचता रहे। मुख्य वक्ता अनुराधा सुफल जी ने कहा कि शारीरिक साधना, अनुशासन और सामूहिक सहभागिता से जुड़ा मकर संक्रांति उत्सव, समिति के पाँच प्रमुख उत्सवों में से एक है। यह हम सेविकाओं को राष्ट्र के प्रति अपने संकल्प को दोहराने का अवसर देता है कि हम सभी बिना अपेक्षा और बिना नाम-यश की इच्छा के, निरंतर समाज और राष्ट्र के लिए कार्य करते रहेंगे।

राष्ट्र सेविका समिति, हिमाचल प्रांत द्वारा आयोजित सूर्य नमस्कार महायज्ञ ने यह संदेश दिया कि नारी शक्ति ही संस्कार, साधना और राष्ट्र निर्माण की मूल आधारशिला है। शारीरिक अनुशासन, सामूहिक सहभागिता और निस्वार्थ सेवा के भाव के साथ सेविका बहनों ने यह संकल्प दोहराया कि बिना अपेक्षा और नाम-यश की चाह के निरंतर समाज व राष्ट्र के लिए कार्य करना ही सेविका जीवन की सच्ची दिशा है। सूर्य उपासना के माध्यम से अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने का यह उत्सव सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समरसता और सकारात्मक ऊर्जा का सशक्त प्रतीक बना।

उन्होंने कहा कि जैसे खिचड़ी में हर दाना अपना अलग स्वाद छोड़कर एक रूप हो जाता है, वैसे ही हमें भी अहंकार त्यागकर राष्ट्र और समाज के लिए एक होना चाहिए। यही मकर संक्रांति का संदेश है और यही एक सेविका के जीवन की दिशा है। समिति का कार्य कोई तात्कालिक प्रयास नहीं, बल्कि दीर्घकालीन मौन तपस्या है, जिसका फल पूरे समाज को प्राप्त होता है। सूर्यदेव की उपासना एवं अंधकार से प्रकाश की ओर अग्रसर होने का संदेश देने वाला यह पर्व समाज और राष्ट्र जीवन में सुख, शांति, खुशहाली, समृद्धि तथा सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। कार्यक्रम के अंतर्गत बहनों द्वारा सूर्य नमस्कार का अभ्यास किया गया तथा उसके स्वास्थ्यवर्धक लाभों की जानकारी भी दी गई। उत्सव शाखा उपरांत खिचड़ी एवं तिल-गुड़ का आनंद लेते हुए कार्यक्रम का अत्यंत सुंदर समापन हुआ। ऐसे कार्यक्रम हमारी सांस्कृतिक जड़ों को मजबूत करने में सहायक होते हैं। इनका उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को भारतीय परंपराओं से जोड़ना तथा समाज में इनके प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है।

कार्यक्रम में राजकुमारी सूद, प्रांत सह कार्यवाहिका निधि शर्मा, प्रांत व्यवस्था प्रमुख सुरेखा शर्मा, प्रांत प्रबुद्ध महिला संपर्क प्रमुख शीतल व्यास भी उपस्थित रहीं। साथ ही लगभग 75 बहनों ने कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता की।◆◆◆

टापरी में हिंदू सम्मेलन, समाज को संगठित करने का दिया संदेश

रिकांगपिओ(किन्नौर) टापरी के छोल्तू खेल मैदान में हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन चगांव-टापरी हिंदू सम्मेलन समिति ने किया। इसकी अध्यक्षता संजय नेगी ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ बौद्ध धर्म की भिक्षुणी जोमो ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर रामनी के उपप्रधान अनिल नेगी मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहे, जबकि उत्तर क्षेत्रीय हिंदी परिकोष्ठ प्रभारी महिधर ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखे। मुख्य वक्ता महिधर ने कहा कि भगवान शिव और भगवान बुद्ध की धरती किन्नौर में यह आयोजन किया गया है। अनिल नेगी ने भी समाज को जागरूक और संगठित रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान चगांव और उर्नी की महिला मंडलों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। साथ ही चिट्टे जैसे नशे के दुष्प्रभावों से दूर रहने को लेकर एक नाटक का मंचन किया गया।

नाहन नगर में विशाल हिंदू सम्मेलन में 2500 से अधिक लोगों ने लिया संकल्प

जिला सिरमौर के नाहन नगर में बीते दिनों एक भव्य हिंदू सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। सम्मेलन में क्षेत्र के लगभग 2500 से अधिक सज्जन शक्ति (समाज के जागरूक एवं जिम्मेदार नागरिकों) ने भाग लेकर सामाजिक एकता और सांस्कृतिक चेतना का परिचय दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर प्रबोधा नन्द जी महाराज व जिनकी पावन उपस्थिति से आयोजन को विशेष गरिमा प्राप्त हुई। वहीं सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री हरीश जी रहे।

हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है व हिन्दू चेतना व पंच परिवर्तन से वैभवशाली भारत के निर्माण का लक्ष्य - डॉ. भूमेश

हिंदू समाज को आध्यात्मिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्यों, हिन्दुत्व और सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से भव्य हिंदू सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। हिन्दू सम्मेलन की अध्यक्षता सेवानिवृत प्रधानाचार्य श्री उतम सिंह ठाकुर ने की तथा मुख्य वक्ता के रूप डॉ. भूमेश (प्रांत शारीरिक शिक्षण प्रमुख-हिमाचल प्रदेश) की गौरवमयी उपस्थिति रही। उन्होंने स्पष्ट संदेश दिया कि समाज संगठित होकर विचार, संस्कार और सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण व भारत को वैभवशाली बनाने की दिशा में अग्रसर हो। थुनाग खंड की हिन्दू सम्मेलन आयोजित समिति द्वारा आयोजित सम्मेलन में लगभग 300 लोग उपस्थित रहे।

नालागढ़ में सुंदर भारती गोस्वामी जी महाराज की उपस्थिति में संपन्न हुआ सम्मेलन

नालागढ़ के राजपुरा मंडल में भव्य हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें वृन्दावन से आये संत पूज्य पाद भक्ति सुंदर भारती गोस्वामी जी महाराज के आशीर्वचन लोगों ने श्रवण किए। उन्होंने कहा कि सेवा, शिक्षा (धर्म की शिक्षा) और संस्कार बहुत आवश्यक है तभी हमारा धर्म और संस्कृति चिर काल तक जीवंत रहेगी। मुख्य वक्ता के रूप में प्रान्त प्रचारक श्रीमान संजय जी ने संघ स्थापना की पृष्ठभूमि, हिंदुत्व के विचार को सार रूप में लोगों के समक्ष रखा और समस्त समाज से पंच परिवर्तन के विषयों सामाजिक समरसता-एकजुट एवं संगठित समाज, कुटुंब प्रबोधन-संस्कार युक्त परिवार, पर्यावरण संरक्षण, नागरिक कर्तव्य का पालन तथा स्वदेशी - स्वत्व का बोध) को अपने जीवन में धारण करने का आह्वान किया। कार्यक्रम अध्यक्ष श्री जगदीश चंद जी ने कहा कि हिन्दुओं का संगठित होना आज के युग की आवश्यकता है इसी में ही भारत और विश्व का कल्याण है। भव्य हिंदू सम्मेलन में भारी संख्या में माताएं - बहने, बच्चे- बुजुर्ग एवं सज्जनों ने भाग लिया, कार्यक्रम की कुल संख्या 1100 से अधिक रही।

राष्ट्र एवं समाजहित में कंटेंट क्रिएट करें सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर : प्रताप समयाल

सोशल मीडिया पर सक्रिय लोगों का एक कार्यक्रम CREATE FOR THE NATION के अंतर्गत काँगड़ा जिला के नूरपुर के सेलेब क्लब में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्र से सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, यू ट्यूब पर सक्रिय 92 लोगों सहित कई श्रोता भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचार प्रमुख श्रीमान प्रताप जी उपस्थित रहे। समाज में सोशल मीडिया के प्रभाव और कंटेंट क्रिएटर की देश निर्माण में भूमिका का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा की सोशल मीडिया प्रभावक आजकल युवाओं के मन में गहरा प्रभाव डाल रहे हैं, इसलिए उनको राष्ट्रहित, समाजहित व युवाओं को सकारात्मक, सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने वाले कंटेंट डालने चाहिए। उन्होंने कहा कि उनके कंटेंट को देखकर अगर किसी भी व्यक्ति की जीवन में सुधार आता है तो यह उस कंटेंट क्रिएटर के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रसिद्ध गायक राज जेरी रहे। मुख्यातिथि ने समाज में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव के बारे में बताते हुए कहा कि आजकल सोशल मीडिया प्रचार प्रसार का एक सशक्त माध्यम बन चुका है और इसका उपयोग राष्ट्रहित में होना चाहिए। कार्यक्रम में गायक जैरी भरमौरी व सह विभाग कार्यवाह अरविन्द कुमार विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में उपस्थित सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्ज ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये और उन सभी को एक मंच प्रदान करने के लिए आयोजकों का धन्यवाद भी किया। कार्यक्रम में विभाग प्रचारक विवेक कुमार, बालकृष्ण शर्मा, रंजीव कुमार हरदेव सिंह अनीश ठाकुर अंकुश कुमार, कुलभूषण डोगरा, प्रदीप सिंगला सहित कई लोग उपस्थित रहे। ◆◆◆

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी एवं इतिहास विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

शैक्षणिक शोध, इतिहास एवं सांस्कृतिक अध्ययन को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के अंतर्गत ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान, नेरी हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश तथा इतिहास विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, आनंद (गुजरात) के मध्य विश्वविद्यालय में कुलपति कार्यालय में एक गरिमामयी कार्यक्रम के दौरान समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी की ओर से संस्थान के निदेशक डॉ. चेतराम गर्ग व डॉ. राकेश शर्मा संपादक इतिहास दिवाकर ने हस्ताक्षर किए जबकि विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. निरंजनभाई पटेल, कुलसचिव डॉ. भाईलाल पुरुषोत्तम भाई पटेल तथा प्रो. वसंत पटेल अध्यक्ष, इतिहास विभाग ने इस महत्वपूर्ण समझौते पर हस्ताक्षर कर सहयोग की औपचारिक शुरुआत की। ◆◆◆

संस्कृत जागरण से सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्र निर्माण

संस्कृत भाषा और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रचार-प्रसार हेतु संस्कृत भारती-हिमाचल प्रदेश (न्यास) द्वारा प्रान्त स्तर पर जनवरी 2026 में एक व्यापक एवं प्रेरणादायी शैक्षणिक अभियान संचालित किया गया। इस अभियान के अंतर्गत दिनांक 01 जनवरी से 10 जनवरी 2026 की अवधि में प्रदेश के विभिन्न विभागों में दशदिवसीय आवासीय कुल 6 प्रबोधन वर्गों का सफल आयोजन किया गया। इन छह प्रबोधन वर्गों में कुल 336 शिक्षार्थियों ने सहभागिता की, जिनमें 154 महिलाएं एवं 182 पुरुष सम्मिलित रहे। प्रबोधन वर्गों के दौरान संस्कृत में दैनिक व्यवहार, संधि-समास, कारक-विभक्ति, भाषिक तत्व, भाषाक्रीड़ा, अनौपचारिक प्रतिभा प्रदर्शन सहित अनेक विषयों का व्यवस्थित प्रशिक्षण प्रदान किया गया। साथ ही कार्यकर्त्ता निर्माण एवं अभिप्रेरणा की दृष्टि से बौद्धिक सत्रों एवं परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। ◆◆◆

देवभूमि हिमाचल

आस्था, संस्कृति और राष्ट्र चेतना का संगम

बरोट मंडल में ऐतिहासिक हिंदू सम्मेलन

देवभूमि हिमाचल जहां कण-कण में आस्था है, जहां संस्कृति साँसों में बसती है और देव परंपरा समाज को दिशा देती है। इसी देवभूमि के जिला मंडी के अंतर्गत पावन बरोट मंडल में हाल ही में एक ऐसा ऐतिहासिक क्षण साकार हुआ, जिसने अध्यात्म, संस्कृति और राष्ट्र चेतना को एक सूत्र में पिरो दिया। बरोट मंडल में आयोजित भव्य हिंदू सम्मेलन केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह हिंदू समाज की चेतना, एकता और उत्तरदायित्व का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया। इस सम्मेलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब समाज अपने मूल्यों के प्रति सजग होता है, तब वह राष्ट्र निर्माण की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाता है। इस ऐतिहासिक सम्मेलन में 3000 से अधिक सज्जन शक्ति - अर्थात् समाज के जागरूक, जिम्मेदार और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक - एकत्रित हुए। सभी ने सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण तथा सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा का सामूहिक संकल्प लिया। यह दृश्य स्वयं में हिंदू समाज की संगठित शक्ति और चेतना का परिचायक था। इस पावन आयोजन की सबसे विशेष और अनुपम बात रही- स्थानीय आराध्य देव श्री गहरी नेर जी की दिव्य उपस्थिति। हिंदू सम्मेलन समिति के एक विनम्र निवेदन मात्र से देव गहरी नेर जी इस ऐतिहासिक अवसर पर पधारे। उनका आगमन संपूर्ण सम्मेलन के लिए दैवीय आशीर्वाद, ऊर्जा और प्रेरणा का स्रोत बना। देव गहरी नेर जी ने सम्मेलन में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं और सज्जनों को अपने आशीर्वाद से अभिसिंचित किया। देवता जी के मुख्य पुजारी, गुर तथा देवता कमेटी के प्रधान ने भावुक शब्दों में कहा कि देव गहरी नेर जी पहली बार किसी इतने विशाल हिंदू सम्मेलन में सम्मिलित हुए हैं और इस आयोजन से वे अत्यंत प्रसन्न हैं। सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री बनवीर सिंह जी ने अपने ओजस्वी और प्रेरक विचारों से समाज को दिशा प्रदान की। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सामाजिक समरसता ही राष्ट्र की मजबूती की नींव है। जाति, वर्ग और भेदभाव से ऊपर उठकर एकजुट होना ही सशक्त हिंदू समाज की पहचान है। कुटुंब प्रबोधन पर उन्होंने कहा कि परिवार समाज की आधारशिला है। जब परिवार सुदृढ़ होगा, तो समाज और राष्ट्र स्वत: सशक्त बनेंगे। अंत में देव गहरी नेर जी ने हिंदू सम्मेलन समिति बरोट को तीन बार गले लगाकर अपने आशीर्वचन प्रदान किए। यह क्षण केवल आशीर्वाद का नहीं, बल्कि इस बात का संकेत था कि जब समाज, संस्कृति और देव परंपरा एक साथ चलते हैं, तब राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित और उज्ज्वल बनता है।

हिन्दू सम्मेलन में देव-आगमन

देव आगमन संपूर्ण सम्मेलन के लिए दैवीय आशीर्वाद एवं प्रेरणा का स्रोत बना। इस देवभूमि हिमाचल में हमारे स्थानीय इष्ट देवता केवल रक्षक ही नहीं अपितु सुख:दुख के भी साथी हैं। उनकी शरण में जाकर दुःखों को झेलने की शक्ति प्राप्त होती है। कष्टों का निवारण कर अपने प्रति हमारी आस्था को और अधिक सुदृढ़ करते हैं। हमारे सुखद क्षणों में आमंत्रण स्वीकार कर रथ में आरूढ़ होकर वाद्य यंत्रों के साथ बड़ी धूमधाम से आमंत्रणकर्ता के घर में विराजमान होते हैं और परिवार को आशीर्वाद देकर भविष्य में सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। स्वयं से संबद्ध मेलों अथवा उत्सवों में अपनी प्रसन्नता अभिव्यक्त करते हुए जनसाधारण के साथ झूम-झूम कर नाचते हैं; उनका मित्रवत् व्यवहार देव मानव की दूरी को मिटा देता है। मानव मात्र के कल्याण के लिए ही देवताओं की उत्पत्ति मानी गई है। उनके लिए सभी मानव जाति एक समान है, न वर्ग भेद है, न जातिगत भेदभाव। हिन्दू समाज में अस्पृश्यता जैसी विकृतियां उत्पन्न हो गई; जिसके कारण पारस्परिक एकता और विश्वास की कमी बढ़ती गई और हिन्दू समाज कई वर्गों एवं जातियों में बंटता गया। देश के परतंत्र होने का ये भी एक कारण बना। दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता के पश्चात् भी हमारा हिन्दू समाज पूर्णतया इस जातिगत भेदभाव से स्वयं को उभार नहीं पाया है। जातीय भेदभाव आज भी कहीं न कहीं हमारे सामान्य व्यवहार में परिलक्षित होता है। हमारे पर्वतीय क्षेत्रों में देव परंपरा के अन्तर्गत हिन्दू समाज सवर्ण और दलित वर्ग में बंटा दिखाई देता है। देवता के नाम पर दलित समाज पर कुछ ऐसे बन्धन थोप दिए गये हैं जो भेदभाव को जागृत करते हैं तथापि शिक्षित समाज अब इन रूढ़िवादी परम्पराओं में परिवर्तन लाने के लिए प्रयासरत है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं उनके आनुशांगिक संगठन इस भेदभाव को मिटाने के लिए निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। अपने सनातन धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु तथा हिन्दुओं में एकात्म भाव बढ़े, इसलिए हिन्दू सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। जिनको हम अपना इष्ट मानते हैं, जिनके प्रति हमारी गहरी आस्था है, जो समाज में एकता का संबल बन सकते हैं, उनका ऐसे सम्मेलनों में विराजमान होना देव समाज का जातिगत भेदभाव छोड़कर मिलकर सहभोज करना, नृत्य गायन करना एक नई भेदभाव रहित व्यवस्था को जन्म दे सकता है।

हिमाचल की बेटी नितिका बनीं सेवा, साहस और समर्पण की मिसाल

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले की बेटी नितिका ने यह सिद्ध कर दिया है कि निस्वार्थ सेवा और कर्तव्यनिष्ठा से राष्ट्रीय पहचान पाई जा सकती है। उपमंडल देहरा की रहने वाली नितिका पिछले तीन वर्षों से 'आपदा मित्र' के रूप में जिले में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। प्राकृतिक आपदाओं के कठिन समय में उन्होंने दिन-रात बिना किसी स्वार्थ के लोगों की मदद की और प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर राहत एवं बचाव कार्यों में योगदान दिया। आपदा के दौरान प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाना, भोजन व आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराना, राहत शिविरों में सहयोग करना और पशुओं के रेस्क्यू जैसे चुनौतीपूर्ण कार्य नितिका की दिनचर्या का हिस्सा रहे हैं। एडीएम कांगड़ा शिल्पी बेक्टा के अनुसार, नितिका की सेवाएं केवल दायित्वों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि वे आपदा पीड़ित परिवारों के लिए आशा और भरोसे का संबल बनीं। उनकी निरंतर सेवा, अनुशासन और संवेदनशीलता के लिए उन्हें 26 जनवरी को रा ष्ट्रपति भवन में सम्मानित किए जाने का गौरवपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है। नितिका आज न केवल कांगड़ा बल्कि पूरे हिमाचल की बेटियों के लिए प्रेरणास्रोत हैं, जो यह संदेश देती हैं कि सेवा ही सबसे बड़ा सम्मान है।◆◆◆

हिमाचल का 'माउंटेन मैन' राधा जिन्होंने छैनी-हथौड़े से पहाड़ को झुका दिया

आज के युग में जब आधुनिक मशीनों से सुरंगें बनाई जाती हैं, तब चम्बा जिले के चुराह क्षेत्र के राधा की कहानी असाधारण साहस और संकल्प का प्रतीक बनकर सामने आती है। 1950 के दशक में, जब न बिजली थी, न तकनीक और न ही कोई सरकारी सहायता, तब राधा ने अकेले दम पर पहाड़ में सुरंग बनाकर इतिहास रच दिया। चांजू क्षेत्र के लोग उस समय अनाज पीसने के लिए घराटों पर निर्भर थे, जो मानसून में अक्सर बह जाते थे। इस समस्या से परेशान ग्रामीणों की पीड़ा ने राधा को भीतर से झकझोर दिया।

उन्होंने नाले के पानी को सुरक्षित दिशा देने का संकल्प लिया, लेकिन सामने एक विशाल पहाड़ खड़ा था। लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाया, पर राधा डिगे नहीं। चार वर्षों तक उन्होंने छैनी और हथौड़े से पहाड़ काटकर सुरंग बना डाली। यह सुरंग केवल पानी का रास्ता नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, दृढ़ इच्छाशक्ति और जनसेवा का जीवंत उदाहरण है। राधा की यह उपलब्धि बताती है कि सच्चा संकल्प असंभव को भी संभव बना देता है।◆◆◆

धर्मशाला के गौरव : परफ्यूम से बुनी आत्मनिर्भरता और सपनों की खुशबू

धर्मशाला के जवाहर नगर निवासी गौरव ने यह साबित कर दिया है कि स्थानीय संसाधनों और नवाचार से वैश्विक पहचान बनाई जा सकती है। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश से केमिस्ट्री में एमएससी करने वाले गौरव को पढ़ाई के दौरान एसेंशियल ऑयल्स पर काम करते हुए परफ्यूम निर्माण का विचार आया।

वर्ष 2023 में उन्होंने घर से ही परफ्यूम बनाना शुरू किया और अपने ब्रांड का नाम 'त्रिगर्त परफ्यूम' रखा, जो कांगड़ा रियासत के प्राचीन नाम से प्रेरित है। उनका उद्देश्य कम केमिकल और उच्च गुणवत्ता वाले एसेंशियल ऑयल आधारित इत्र लोगों तक पहुंचाना है। वर्तमान में उनके ब्रांड के तहत आठ तरह की खुशबू उपलब्ध हैं। साथ ही, वे युवाओं की पसंद को ध्यान में रखते हुए परफ्यूम ऑयल आधारित विकल्प भी दे रहे हैं। भविष्य में सेंटेड कैंडल और सोया वैक्स कैंडल लॉन्च करने की योजना है। गौरव की यह यात्रा बताती है कि स्थानीय सोच और वैज्ञानिक दृष्टि से न केवल रोजगार पैदा किया जा सकता है, बल्कि हिमाचल की खुशबू को विश्व तक पहुंचाया जा सकता है।◆◆◆

...जब हंसता-खेलता शहर ही नहीं, पूरी संस्कृति ही डूब गई थी

अभिषेक सोनी

चढ़ी आया पाणी देख कुंगरे ते सांढूए
झीला री करी लैणी सैर....
वेड़िया के ठेकेदारा आया वारा जो, असां पइयां विपदा...

9 अगस्त, 1961 को पहली बार भाखड़ा बांध का जलस्तर बढ़ा था, जिसमें बिलासपुर का पुराना शहर डूब गया था। इस शहर का डूबना एक संस्कृति का डूबना माना गया था, क्योंकि गोबिंदसागर झील में कहलूर रियासत का रंगमहल व नया महल के साथ साथ पुराने महल शिखर शैली के 99 मंदिर, स्कूल, कालेज, पंचरुखी नालयां का नौण, दंडयूरी, बांदलिया, गोहर बाजार, सिक्खों का गुरुथान, गोपालजी मंदिर और कचहरी परिसर भी डूब गया था। अब गोबिंदसागर झील का जलस्तर कम होने से कहलूर रियासत के ऐतिहासिक मंदिरों के गुंबद पानी की सतह पर तैरते से नजर आने लगे हैं।

जिस तरह से जलस्तर कम होता जाएगा, वैसे-वैसे मंदिर पूरी तरह से पानी से बाहर आ जाएंगे। हालांकि, कई मंदिर सिल्ट के नीचे दब गए हैं। बस कुछ ही मंदिर बचे हैं, जो हर साल गोबिंदसागर झील में कुछ माह के लिए जल समाधि लेते हैं और फिर पानी कम होने के बाद बाहर आते हैं। फरवरी माह तक ये मंदिर पूरी तरह दिखाई देने लगते हैं। भाखड़ा बांध बनने के बाद वर्ष 1960 में कहलूर रियासत के दर्जनों ऐतिहासिक मंदिर गोबिंदसागर झील में समा गए थे। हर वर्ष गोबिंदसागर झील में जलमग्न होने वाले मंदिरों में रंगनाथ मंदिर, खनेश्वर, नारदेश्वर, गोपाल मंदिर, मुरली मनोहर मंदिर, बाह का ठाकुरद्वारा, ककड़ी का ठाकुरद्वारा, नालू का ठाकुरद्वारा और खनमुखेश्वर मंदिर शामिल हैं। जो हर साल जलस्तर बढने पर डूब जाते हैं और पानी उतरते ही फिर उभर आते हैं।

हम बचपन से देख रहे हैं यह प्रकिया

हर वर्ष यह ऐतिहासिक मंदिर जुलाई माह के बाद जलमग्न होना शुरू हो जाते हैं। अब जैसे ही मंदिर बाहर आएंगे, तो यहां स्थानीय लोगों के साथ साथ बाहरी जिलों व राज्यों के लोगों की आवाजाही शुरू हो जाएगी। कई लोग यहां पिकनिक का आनंद लेने भी पहुंचते हैं।◆◆◆

पुस्तक समीक्षा

'तत्त्वमसि' में निहित है संघ के प्रचारकों का जीवन दर्शन - प्रो.संजय द्विवेदी

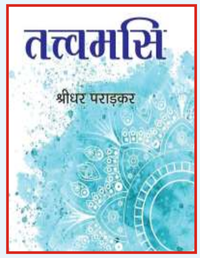

समग्र रूप से देखा जाए तो श्रीधर पराड़कर का उपन्यास 'तत्त्वमसि' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को किसी वैचारिक घोषणा-पत्र या संगठनात्मक विवरण के रूप में नहीं, बल्कि एक जीवंत जीवन-दर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है। यह कृति प्रचारकों के त्याग, तप और समर्पण को मानवीय संवेदना के साथ उभारती है। परितोष बाबू जैसे पात्र के माध्यम से लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि संघ का कार्य केवल शाखा या अनुशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के आंतरिक रूपांतरण से समाज के व्यापक परिवर्तन की यात्रा है।

उपन्यास का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य इसकी सहजता और संवादात्मक शैली है। संघ को लेकर समाज में फैली भ्रांतियों, अधूरी जानकारियों और पूर्वग्रहों का उत्तर लेखक किसी तर्क-वितर्क या प्रतिवाद के माध्यम से नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों, संबंधों और संवादों के जरिए देते हैं। अफरोज, नोरा, अनिता, स्नेहल जैसे विविध पृष्ठभूमि के पात्र यह दिखाते हैं कि संघ की कार्यपद्धति समावेशी है, जो व्यक्ति, परिवार और समाज को जोड़ते हुए विश्वास का सेतु बनाती है। '**तत्त्वमसि**' प्रचारक परंपरा के उस साधनात्मक पक्ष को भी उद्घाटित करता है, जिसमें सामान्य जीवन जीते हुए असाधारण संकल्प का निर्वाह किया जाता है। परिवार न बसाने का निर्णय, व्यक्तिगत आकांक्षाओं का त्याग और राष्ट्र-समाज को ही अपना परिवार मानने की भावना—ये सब उपन्यास में कहीं भी बोझिल उपदेश की तरह नहीं आते, बल्कि स्वाभाविक जीवन-प्रवाह का हिस्सा बनकर सामने आते हैं। संघ के मूल प्रतीक भगवा ध्वज, गुरु-परंपरा और सरसंघचालक की भूमिका भी कथा के भीतर इतनी सरलता से समाहित हैं कि पाठक उन्हें सहज रूप से समझ पाता है। शताब्दी वर्ष के संदर्भ में यह उपन्यास संघ की ऐतिहासिक यात्रा के साथ-साथ उसके आत्मिक और सांस्कृतिक पक्ष को समझने का एक सशक्त माध्यम बनता है। अंततः 'तत्त्वमसि' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारकों के जीवन-दर्शन को समझने की एक संवेदनशील खिड़की है। यह कृति पाठक को विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि समाज परिवर्तन का मार्ग बाहरी आंदोलनों से नहीं, बल्कि भीतर के संस्कार और निष्ठा से होकर जाता है।◆◆◆

दुनिया के सबसे बड़े टेक शो में बढ़ा भारत का दबदबा आयोजकों ने की भारतीय स्टार्टअप्स की तारीफ

अमेरिका के लास वेगास में हो रहे कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स शो (सीईएस 2026) में भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप्स की बढ़ती मौजूदगी ने वैश्विक टैक जगत का ध्यान खींचने में सफलता पाई है और सीईएस के वाइस प्रेसिडेंट और शो डायरेक्टर जॉन केली ने भारतीय भागीदारी की सराहना की है।

दुनिया के सबसे बड़े टेक्नोलॉजी इवेंट, कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स शो (सीईएस 2026) में भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप्स की बढ़ती उपस्थिति चर्चा का विषय बनी हुई है। शो के एक शीर्ष व्यापारी ने भारतीय भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि आने वाले वर्षों में वे भारत से और ज्यादा व्यापक भागीदारी का स्वागत करते हैं। सीईएस के वाइस प्रेसिडेंट और शो डायरेक्टर जॉन केली ने पीटीआई से बातचीत के दौरान कहा, सीईएस में भारतीय उपस्थिति लगातार बढ़ रही है। मुझे लगता है कि विश्व ज्यादा से ज्यादा भारतीय स्टार्टअप्स को यहां आते और भाग लेते हुए देख रहा है। यह भारत सरकार की आत्मनिर्भर राष्ट्र की सोच का ही परिणाम है कि भारतीय स्टार्टअप का लाभ उठाते हुए स्वयं को श्रेष्ठ कर सके हैं।

अल्ट्राह्यूमन का विशेष उल्लेख

केली ने विशेष रूप से बेंगलुरु स्थित टेक्नोलॉजी और वियरेबल कंपनी अल्ट्राह्यूमन का जिक्र करते हुए कहा कि हम इस साल शो में उनका स्वागत करने के लिए बहुत उत्साहित हैं। अल्ट्राह्यूमन के उत्पादों में दुनिया का सबसे हल्का स्लीप-ट्रैकिंग वियरेबल (स्मार्ट रिंग), एक निरंतर ग्लूकोज मॉनिटरिंग मंच (कंटीन्यूअस ग्लूकोज मॉनिटरिंग प्लेटफॉर्म) और एक प्रिवेंटिव ब्लड टेस्टिंग प्लेटफॉर्म शामिल हैं। इस शो में लगभग 150 देशों से लोग इसमें शामिल हो रहे हैं। विश्व के विभिन्न देशों से शो में 40 प्रतिशत उपस्थित लोग और प्रदर्शक अमेरिका के बाहर के हैं। 4,100 से ज्यादा प्रदर्शक एआई, डिजिटल हेल्थ, एनर्जी, रोबोटिक्स और मोबिलिटी जैसे क्षेत्रों में अपने नवाचार की प्रस्तुति देकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं। इस मंच पर भारत की उपस्थिति एवं प्रदर्शन अच्छा रहने से स्टार्टअप्स को विश्व में एक नई पहचान मिल रही है।

ये भारतीय कंपनियां बिखेर रही हैं चमक

CES की वेबसाइट के अनुसार, कई भारतीय कंपनियां और स्टार्टअप्स इस बार अपनी तकनीक का लोहा मनवा रहे हैं।

'मेड इन इंडियाज् से इनोवेटेड इन इंडिया' तक नॉइज के वाइस प्रेसिडेंट (प्रोडक्ट डिवाइसेज) हमिश पटेल ने कहा, हम यहां आकर

और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा करके बहुत गर्व महसूस कर रहे हैं। अब हमारी कंपनी काफी परिपक्व हो चुकी है। हमारी अपनी शोध और विकास (आरएंडडी) टीम है और हम ज्यादातर डिजाइन और निर्माण भारत में ही करते हैं। हम यहां उन उत्पादों के साथ आए हैं जो दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उत्पादों को टक्कर दे सकते हैं। ◆◆◆

हिमाचल-भूटान हरित मैत्री

5,000 चिलगोजा पौधों से मजबूत होगी दोस्ती

भारत और भूटान के बीच मित्रता केवल कूटनीतिक संबंधों तक सीमित नहीं, बल्कि यह साझा संस्कृति, विश्वास और हिमालयी पर्यावरण से जुड़ी गहरी साझेदारी है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए हिमाचल प्रदेश सरकार भूटान को 5,000 चिलगोजा पौधे भेंट करने जा रही है। हिमाचल द्वारा यह पौधे भूटान के प्रतिनिधिमंडल को औपचारिक रूप से सौंपे जाएंगे। लगभग 2,000 किलोमीटर की यात्रा तय कर ये पौधे छह दिनों में थिंपू पहुंचेंगे। यह यात्रा केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और दीर्घकालीन सहयोग की मिसाल है। चिलगोजा हिमालयी क्षेत्र की महत्वपूर्ण प्रजाति है, जो जैव विविधता संरक्षण और स्थानीय आजीविका से जुड़ी हुई है। इस पहल से दोनों देशों के बीच 'हरित मैत्री' को नई मजबूती मिलेगी और जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौती से निपटने में सहयोग बढ़ेगा।

लोक संस्कृति

'हिमाचल की माघी साजी और भांजों की खिचड़ी'

रिश्तों की अनोखी परंपरा

शीतल शर्मा व्यास

हिमाचल प्रदेश में मकर संक्रांति को कई क्षेत्रों में 'माघ साजी' के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व स्थानीय लोकसंस्कृति में नए कृषि चक्र, ऋतु परिवर्तन और पारिवारिक मेल-जोल का प्रतीक है। माघ साजी के दिन घरों में विशेष पकवान बनाए जाते हैं, जिनमें खिचड़ी का प्रमुख स्थान होता है। माघ साजी के अवसर पर भांजों को खिचड़ी खिलाने की परंपरा इस पर्व को विशुद्ध पारिवारिक उत्सव का रूप देती है। यह परंपरा बताती है कि हिमाचल का लोकसमाज पर्वों के माध्यम से रिश्तों को सहेजता है और पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक संवाद को भी जीवित रखता है। इस दिन विवाहित बेटियां उनके मायके में भांजों के साथ खिचड़ी खाने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है। माँ और भाभियां उन्हें स्नेहपूर्वक खिचड़ी खिलाती हैं। कई स्थानों पर यह खिचड़ी उपहार स्वरूप भी भेजी जाती है।

लोकमान्यता है कि इस दिन भांजों को खिचड़ी खिलाने से परिवार में सुख-शांति बनी रहती है और संतान का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। इससे भी अधिक यह परंपरा मातृ पक्ष के प्रेम, जिम्मेदारी और सामाजिक जुड़ाव को अभिव्यक्त करती है। यह रिवाज बताता है कि हिमाचल की संस्कृति में रिश्ते केवल रक्त-संबंधों से नहीं, बल्कि भावनाओं और दायित्वबोध से निभाए जाते हैं। हिमाचल की लोकसंस्कृति में पर्वों का उद्देश्य दिखावा नहीं, बल्कि जीवन को सहज और संतुलित बनाना है। खिचड़ी के माध्यम से यह संस्कृति एवं प्रकृति के साथ तालमेल, सीमित संसाधनों में संतोष और रिश्तों की गरिमा एवं गर्माहट का संदेश देती है।◆◆◆

गाडर विवाह की परंपरा

हिमाचल प्रदेश के कठिन भौगोलिक, आर्थिक जीवन से जुड़ी हुई गाडर प्रथा एक व्यावहारिक सामाजिक व्यवस्था थी।

हालाँकि 'गाडर प्रथा' अब पहले जैसी खुली और सामान्य नहीं रही। परंतु आज भी ऊपरी हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में इससे मिलते-जुलते विवाह रूप कभी-कभी देखने को मिल जाते हैं। सामान्य शादियों में दूल्हा अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, बाजे-बैंड के साथ बारात लेकर लड़की के घर जाता है लेकिन गाडर विवाह में बारात नहीं जाती। केवल गाडर (दूल्हा) और उसके दो-चार नज़दीकी लोग लड़की के घर जाकर संबंध की स्वीकृति लेते हैं और वहां से लड़की को सम्मानपूर्वक लड़के के घर लाकर विवाह संस्कार पूरे किए जाते हैं। यह विवाह शांति और सरलता से बिना शोर-शराबे के होता है। यह इस बात का प्रतीक था कि विवाह प्रदर्शन नहीं बल्कि एक संस्कार है। इस विवाह प्रथा में दहेज जैसी कोई परंपरा नहीं होती। लड़का या उसका परिवार लड़की से कुछ नहीं मांगता बल्कि, कभी-कभी लड़का, लड़की के घर कुछ उपहार लेकर जाता। न बड़े भोज या खर्चे, बस गाँव के कुछ लोग, परिवारजन और देवता के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। साधारण भोजन, मिठाई के साथ यह विवाह सम्पन्न होता है। इससे गरीब परिवारों पर कोई आर्थिक बोझ नहीं पड़ता था। इसलिए यह प्रथा गरीब वर्ग के लिए सम्मानजनक और विवाह का माध्यम थी। सादगी, सहमति और बिना दिखावे का विवाह। अब युवा भी कई बार कहते हैं हम सादा विवाह करेंगे। देवता के सामने प्रतिज्ञा लेंगे, बारात नहीं। यह आधुनिक रूप में गाडर परंपरा की पुनरावृत्ति कही जा सकती है। इसका सांस्कृतिक अर्थ है कि भले ही समय और नाम बदल गया हो,पर हिमाचली समाज की मूल भावना सादगी, समानता और देव-आस्था अभी भी जीवित है। गाडर प्रथा थोड़े बहुत बदलावों के साथ लोकसंस्कृति के रूप में, लोक-स्मृति में और सादे विवाहों की प्रेरणा के रूप में आज भी जीवंत है।◆◆◆

मंडी शिवरात्रि
देव-मिलन की परंपरा

डॉ. सुनीता जसवाल

'मंडी लगीरा म्हारे मेला'.. आई लोड़ी मेले जो जरूर तेरी सो' इस गीत के गुनगुनाते ही मंडी की शिवरात्रि का चित्र मन मस्तिष्क में घूमने लगता है। सैंकडों देवता, भव्य रथ असंख्य देवलू और अपार जनसमूह तथा लोकमानस में श्रद्धा और भक्ति का सैलाब, मंडी शिवरात्रि महोत्सव का मनोरंजन दृश्य उपस्थित करता है। हिमाचल प्रदेश के मंडी जनपद में मनाई जाने वाली मंडी शिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि आस्था, संस्कृति और लोक परंपराओं का जीवंत संगम है। इसे उत्तर भारत के सबसे प्राचीन और विशिष्ट धार्मिक मेलों में गिना जाता है। इस पर्व की सबसे अनूठी विशेषता है- देवताओं का मिलन, जो इसे भारत के अन्य शिवरात्रि आयोजनों से अलग पहचान देता है।

मंडी शिवरात्रि की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : मंडी शिवरात्रि की परंपरा का आरंभ सेन वंश के शासनकाल से जुड़ा माना जाता है। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार,17वीं शताब्दी में मंडी राज्य के राजा अजबर सेन इस परंपरा के प्रवर्तक माने जाते हैं। एक किंवदंती के अनुसार राजा अजबर सेन ने अपने राज्य में भगवान शिव की विशेष कृपा प्राप्त करने के उद्देश्य से शिवरात्रि के दिन देवताओं को आमंत्रित करने की परंपरा प्रारंभ की। धीरे-धीरे यह आयोजन राज्य संरक्षण में भव्य मेले का रूप लेता चला गया। मंडी नगर 'छोटी काशी' कहा जाता है क्योंकि यहां ब्यास नदी के तट पर अनेक प्राचीन शिव मंदिर स्थित हैं। मंडी शिवरात्रि का आयोजन इन्हीं मंदिरों और शिव-शक्ति परंपरा से गहराई से जुड़ा हुआ है।

शिवरात्रि पर्व का धार्मिक महत्व : शिवरात्रि भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह का पावन पर्व माना जाता है। इस दिन उपवास, रात्रि जागरण, शिवलिंग पर जलाभिषेक तथा मंत्र-जप का विशेष महत्व है। मंडी जनपद में यह पर्व केवल एक दिन तक सीमित न रहकर लगभग सात से आठ दिनों तक चलने वाले महोत्सव में परिवर्तित हो जाता है, जिसमें धार्मिक अनुष्ठानों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं।

देव-मिलन की परंपरा : मंडी शिवरात्रि की सबसे विशिष्ट और विश्वविख्यात परंपरा है-देवताओं का मिलन। इस अवसर पर कुल्लू और मंडी जिलों से लगभग सैंकड़ों देवी-देवता अपने-अपने रथों, पालकियों और छत्रों के साथ मंडी पहुंचते हैं। देवताओं का यह मिलन जीवंत और सजीव माना जाता है। प्रत्येक देवता अपने कारदारों, गुरों और भक्तों के साथ नगर में प्रवेश करता है। ढोल-नगाड़ों, शहनाइयों और पारंपरिक वेशभूषा के साथ देव यात्राएँ नगर की शोभा बढ़ा देती हैं।

मंडी के राजदेवता माधव राय की भूमिका : मंडी शिवरात्रि में राजदेवता माधव राय को विशेष स्थान प्राप्त है। परंपरा के अनुसार, सभी देवी-देवता शिवरात्रि के अवसर पर राजदेवता माधव राय को सम्मान देने मंडी आते हैं। यह देव-मिलन दरअसल सामाजिक और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक है, जहाँ सभी देवताओं को समान आदर प्राप्त होता है। शिवरात्रि का सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष- मंडी शिवरात्रि मेला के अवसर पर अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजन भी होते हैं जिसमें असंख्य लोगों की भागीदारी रहती है। यह धार्मिक एवं लोकसंस्कृति का महोत्सव है। इस दौरान लोकनृत्य, लोकगीत, नाट्य प्रस्तुतियाँ और पारंपरिक खेल आयोजित होते हैं। स्थानीय कारीगरों, हस्तशिल्पियों और व्यापारियों के लिए यह मेला आजीविका का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

यह मेला सामाजिक समरसता का एक अद्वितीय उदाहरण है। वास्तव में मंडी शिवरात्रि का इतिहास और देव-मिलन की परंपरा भारतीय लोकधार्मिक संस्कृति की अनमोल धरोहर है। यह पर्व श्रद्धा और उत्सव, परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम है। जिसमें ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और स्थानीय परंपराओं का अद्भुत मिलन होता है। मंडी शिवरात्रि न केवल भगवान शिव की आराधना का पर्व है, बल्कि यह हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक आत्मा का प्रतिबिंब भी है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी पवित्रता और गरिमा के साथ जीवित है। मंडी का शिवरात्रि मेला इस जनपद की ऐतिहासिक परंपराओं को संजोए हुए हैं। शिवरात्रि के दौरान पूरे इलाके में रिश्तेदारों का घरों में आना-जाना, सामूहिक रूप से शिवजी की आराधना एवं पूजा-अर्चना करना तथा पारंपरिक पकवान बांटना इस मेले के सामाजिक सौहार्द को भी समृद्ध बनाता है।◆◆◆

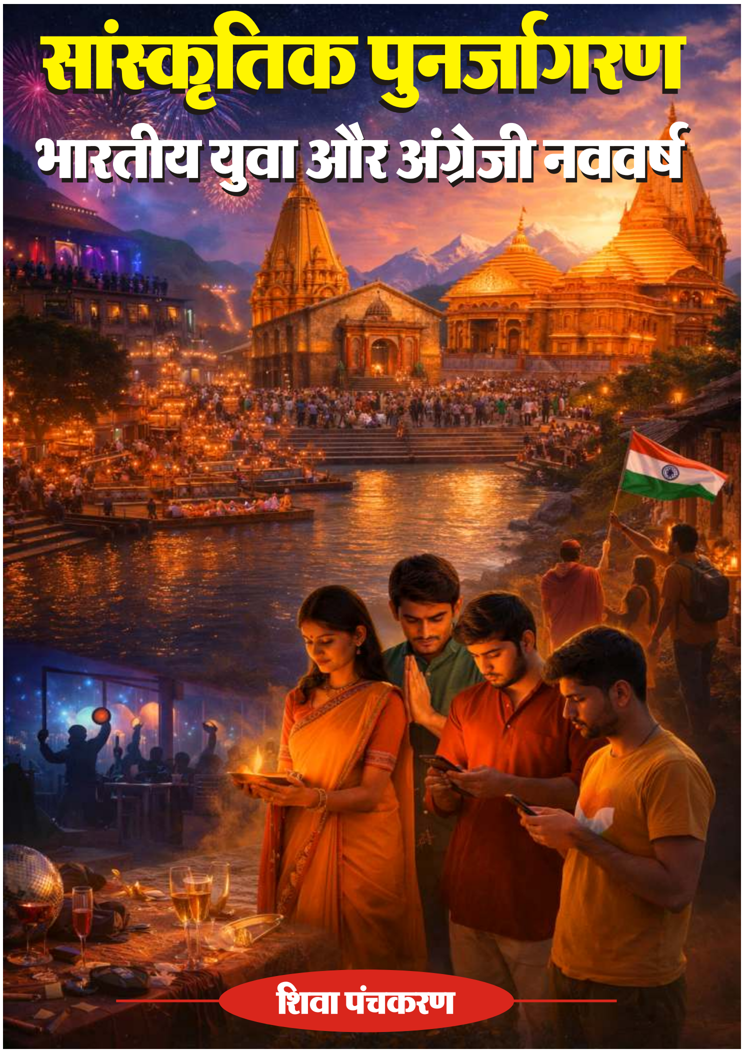

भारतीय प्राचीन वैज्ञानिक काल गणना के अनुसार सृष्टि संवत एवं नव संवत्सर चैत्र प्रतिपदा को प्रारंभ होता है,जो इस वर्ष 19 मार्च 2026 को प्रारंभ होने जा रहा है। भारतीय अध्यात्म और कर्मकांड तथा ज्योतिष में इसी काल गणना के अनुसार तिथियां और शुभ मुहूर्त की गणना की जाती है। वर्तमान में भी भारत के विभिन्न प्रांतों में चैत्र प्रतिपदा को नव वर्ष के उपलक्ष्य में विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यक्र म आयोजित किए जाते हैं। हिंदू धर्म एवं संस्कृति में चैत्र प्रतिपदा का महत्व निविवाद है। इसके विपरीतम भारतवर्ष में अपनी प्राचीन परंपराओं से हटकर अंग्रेजीयत और कॉन्वेंट की शिक्षा के दुष्प्रभाव से प्रतिवर्ष 31 दिसंबर को नए साल पर कार्यक्रम आयोजित करके खूब हुड़दंग मचाया जाता है, जिसमें युवाओं द्वारा नशे और शराब का धडल्ले से सेवन किया जाता है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकारों द्वारा भी इसे आंखें मूंद कर प्रोत्साहन दिया जाता है।

सौभाग्य से इस वर्ष 31 दिसंबर की रात को भारत के विभिन्न मंदिरों और पवित्र नदियों के संगमों एवं घाटों पर धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन देखने को मिला, जिसमें युवा वर्ग की विशेष भागीदारी रही। अंग्रेजी नववर्ष 2026 के पहले दिन अकेले काशी विश्वनाथ मंदिर नें 3 कि.मी. लम्बी श्रद्धालुओं की लाइन लगी हुई थी। वैष्णो देवी, जगन्नाथ, तिरुपति, कामाख्या मंदिरों में भी आंग्ल नव वर्ष में ऐसी ही भीड़ जुटी हुई है। अयोध्या में दिसंबर मास में पांच करोड़ श्रद्धालुओं ने दर्शन किये। आश्चर्य इस बात का है कि जेन-जी, जेन-अल्फा ने आंग्ल नववर्ष किसी क्लब या पार्टी में मनाने की बजाय मंदिरों और धार्मिक स्थलों का का रुख किया है। धीरे-धीरे डिस्को और पब की जगह, भजन-क्लबिंग ने लेना शुरु की है। नशे और शराब से संबन्धित गानों की जगह रामायण की चौपाई और संस्कृत श्लोकों ने ले ली है। यह परिवर्तन अचानक नहीं हुआ है बल्कि कोलोनियल मानसिकता का राहू जिस भारतीय संस्कृति के सूर्य को ग्रहण लगाने का प्रयास कर रहा था वह सूर्य पुनः अपनी संस्कृति से विश्व को रोशन करने के लिए उदय हो चुका है। भारतीयों के मन में सिनेमा का दुष्प्रचार और वामपंथी विचारधारा के माध्यम से भारत की संस्कृति और परंपराओं का विकृत रूप सामने लाया जा रहा था। इस कारण एक लम्बे समय तक भारतीय मानस इस हीनता के भाव के तले दवा रहा। किन्तु अब युवाओं ने पुनः अपनी संस्कृति की जड़ों को मजबूत करने के लिए खुद को भारतीय दृष्टि, आचार और व्यवहार में ढालना शुरु कर दिया है। सोशल मीडिया से शुरु हुई यह क्रांति अभी जनक्रांति का रूप धारण करने लगी है। मंदिरों की गतिविधियों आसपास के लोगों को रोजगार देती हैं तथा परम्परिक कलाओं, साहित्य, परम्परिक हस्तशिल्प को भी जीवंत करती हैं। प्राचीन काल में भी मंदिर इसी प्रकार बहुत सारी गतिविधयों का केंद्र रहे हैं जहां व्यापार, विभिन्न कलाओं का

समागम और ज्ञान का प्रसार होता था। वर्तमान में भारतीयों की धार्मिक दृष्टि में सकारात्मक बदलाव आने लगा है। इसलिए कुछ वर्षो में केदारनाथ, बद्रीनाथ, हरिद्वार, वृन्दावन, मथुरा, अयोध्या, काशी, हम्पी, श्रीबालाजी, मदुराई, और कामाख्या मंदिर जैसे स्थानों पर पर्यटकों की संख्या बढ़ी है और इसमें बड़ी संख्या युवाओं की है। उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग के अनुसार इस वर्ष वाराणसी के घाटों पर युवाओं की संख्या में वृद्धि हुई है।

आंग्ल नववर्ष में नशे और व्यसनों को छोड़ कर भारतीय युवाओं ने अपना रुख काशी के घाटों में भक्ति भाव तथा अध्यात्म की ओर किया है। यह अपने आप में भारत के लिए सकारात्मक सोच है। इसके साथ ही भारत के पारम्परिक और स्थानीय संस्कृतिक, धार्मिक उत्सवों की झलक पाने के लिए भी युवा उत्साहित हैं। जैसे हाल ही में हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले का 'राउलानी मेला' खूब चर्चा में आया। कंतारा जैसी फिल्में भारतीय युवाओं में खूब प्रिय हो रही हैं। जो न केवल भारत की सांस्कृतिक वैभवता को दिखाती हैं बल्कि भारत की संस्कृतिक एकता की भी परिचायक हैं। अपनी संस्कृति पर गर्व करने का मुख्य कारण युवाओं का अपने इतिहास और संस्कृति से पुन: परिचय होना लगता है, जिसमें सोशल मीडिया ने एक बड़ी भूमिका निभाई है। भारतीय लोग एक लम्बे संघर्ष के कारण अपनी संस्कृति की वैभवता और जानकारी से कट से गये थे किन्तु सोशल मीडिया ने एक आवाज़ प्रत्येक भारतीय को दी है जिस कारण अपनी हि संस्कृति के बारे में उन्हें तुरंत जानकारी मिल जाती है। इसलिए एक फोटो वायरल होने से प्रत्येक युवा के मन में अपनी जड़ों और संस्कृति के बारे में जानने की उत्सुकता बढ़ती है। कॉलोनियल शक्तियों ने धार्मिक बंदोबस्ती और संपत्ति जब्ती विनियमन 1817 के माध्यम से मंदिरों पर नियंत्रण स्थापित किया जो आज तक जारी है जिससे मंदिर कानूनी रूप से सरकार के लिए प्रचुर मात्रा में धन जुटाना का साधन मात्र रह गये है। हिंदू मंदिरों से अर्जित धन का अन्य मजहबों के लिए दुरुपयोग किया जाने लगा है। हिमाचल में हाई कोर्ट ने जब मंदिरों के धन पर सरकार के नियंत्रण के लिए रोक लगायी उसके खिलाफ कोंग्रेस सरकार द्वारा पुन: हाई कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर करना दुर्भाग्यपूर्ण कहा जा सकता है। जबकि श्रद्धालू द्वारा दिया गया दान मंदिर के लिए है और मंदिर के द्वारा ही उसका प्रयोग होना चाहिए। मद्रास हाई कोर्ट ने भी हाल ही में तमिलनाडू सरकार को फटकार लगाते हुए कहा है कि मंदिर का धन उस मंदिर के देवता का है। इस धन से मंदिर न केवल प्रतिदिन हज़ारों लोगों को भोजन करवाते हैं, बल्कि लोक कल्याण के लिए अस्पताल, अनाथालय, वृद्धाश्रम जैसे कई सामाजिक प्रकल्प भी चलाते हैं। किन्तु सरकारों के अंतर्गत आने के बाद मंदिर के परिसर का स्वयं अपना विकास भी रुक जाता है। अयोध्या का राम मंदिर और काशी विश्वनाथ जैसे मंदिर हाल ही में अत्याधुनिक तकनीक और लोगों की आवाज़ाही के लिए अनुकूल बनाये गये हैं। इस कारण श्रद्धालुओं की संख्या में न केवल बढ़ौतरी हुई है बल्कि दर्शन भी सहजता से हो पाने के कारण सांस्कृतिक पर्यटन भी बढ़ा है।

◆◆◆ **लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में इतिहास विभाग के शोधार्थी हैं।**

Dr. Hem Raj Sharma

ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)

(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV

National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India

Formerly Incharge Medical Officer DAH Una, Govt of Himachal Pradesh

Director

JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER

Near Govt College Una HP

Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

Email: drhemrajsharma55@gmail.com

पहाड़ी भित्ति चित्रों में लोक मन की अभिव्यक्ति शिवलीला की कलात्मकता

स्वाति
शोधार्थी दृश्य कला विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

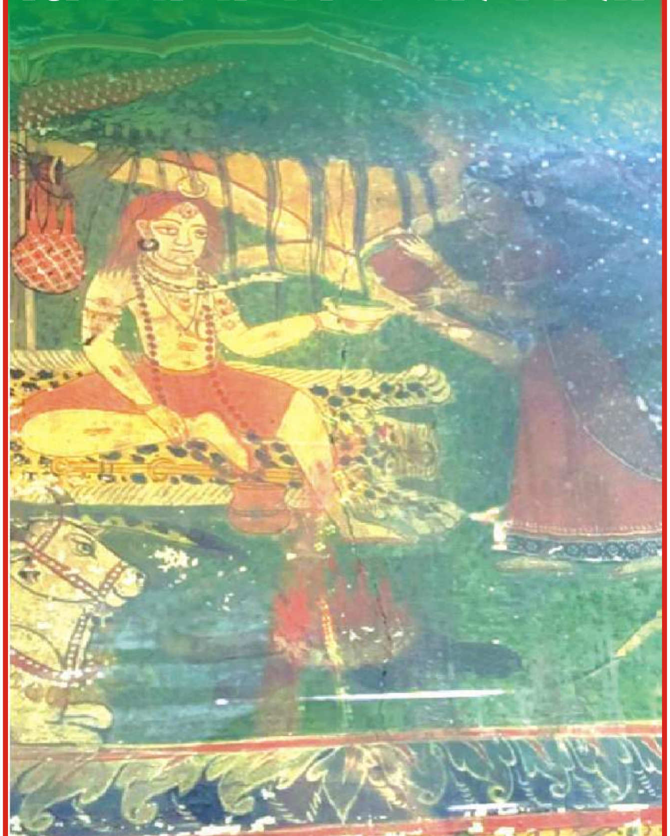

भित्ति चित्र 1 : पार्वती शिव को भांग अर्पण करती हुई
(शिव शक्ति मंदिर छतराडी चंबा हिमाचल प्रदेश)
भित्ति चित्र 2 : शिव विवाह और बारात का दृश्य
(नर्वदेशवर मंदिर सुजानपुर हिमाचल प्रदेश)

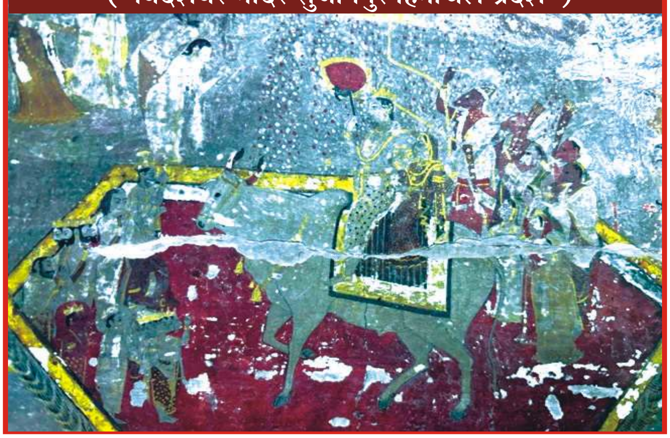

कला लोक मन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह केवल दृश्य सौंदर्य तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना, विश्वास, परंपराएँ और जीवन मूल्य अपने भीतर समेटे रहती है। कला एक ऐसी निरंतर गतिमान परंपरा है, जिसके माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी लोकमान्यताओं, रीति-रिवाज़ों, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का हस्तांतरण होता रहा है। यही कारण है कि कला मानव की सरल भावनाओं की अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ उसके सामाजिक और पर्यावरणीय परिवेश की सजीव झांकी भी प्रस्तुत करती है। पहाड़ी चित्रकला और भित्ति चित्रों में लोक जीवन, प्रकृति और धर्म का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। इस शैली में कृष्ण-राधा की लीलाएँ, बारहमासा, बिहारी सतसई, कालिदास की ऋतुसंहार तथा देवी महामाया जैसे विषयों का प्रभावशाली चित्रण हुआ है। ये चित्र न केवल साहित्य और चित्रकला के अनूठे संगम को प्रस्तुत करते हैं, बल्कि भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित चित्रकला के षडंग सिद्धांतों की व्यावहारिक अभिव्यक्ति भी करते हैं।

अक्सर पहाड़ी कला को केवल कृष्ण लीला तक सीमित मान लिया जाता है, किंतु पहाड़ी भित्ति चित्रों में शिव लीला का चित्रण भी उतना ही महत्वपूर्ण और आकर्षक है। हिमालयी क्षेत्र को लोकमान्यताओं एवं पौराणिक संदर्भों में भगवान शिव का ससुराल माना गया है, जिसका प्रभाव यहाँ की दृश्य कला पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही कारण है कि पहाड़ी चित्रों और मंदिर भित्ति चित्रों में शिव को केवल तपस्वी या संहारक देवता के रूप में नहीं, बल्कि एक लोकदेव, गृहस्थ, पति और पिता के रूप में चित्रित किया गया है।

पहाड़ी भित्ति चित्रों में शिव विवाह और शिव की बारात के दृश्य अत्यंत लोकात्मक रूप में अंकित हैं। भूत-प्रेत, गण और लोकवाद्यों से सजी बारात पहाड़ी समाज की विवाह परंपराओं का प्रतिबिंब प्रतीत होती है। इसके अतिरिक्त कैलाश में शिव का पारिवारिक जीवन, पार्वती और पुत्रों के साथ शांत गृहस्थ रूप तथा शिव-पार्वती के दैनिक लोक प्रसंग – जैसे पार्वती द्वारा भांग बनाना – इन चित्रों को और अधिक मानवीय तथा आत्मीय बनाते हैं। इन दृश्यों में शिव की विविध मुद्राएं, भाव और भंगिमाएं पहाड़ी कला की सहजता और भावनात्मक गहराई को उजागर करती हैं। इन भित्ति चित्रों में शिव योगी, नटराज और गृहस्थ-तीनों रूपों में दिखाई देते

हैं। यह चित्रण दर्शाता है कि पहाड़ी कला परंपरा में शिव लीला केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि वह हिमाचल की सामाजिक संरचना, लोक विश्वासों और सांस्कृतिक पहचान का सजीव प्रतिबिंब भी है। शिव यहाँ एक ऐसे देवता के रूप में सामने आते हैं जो लोक जीवन से गहराई से जुड़े हैं। भित्ति चित्र में भगवान शिव को एक शांत, लोकात्मक और गृहस्थ स्वरूप में दर्शाया गया है। शिव आसन पर विराजमान हैं, उनके शरीर पर भस्म, रुद्राक्ष माला और साधारण आभूषण अंकित हैं। उनके चेहरे पर गंभीरता के स्थान पर सौम्यता और आत्मीयता का भाव दिखाई देता है, जो उन्हें लोकदेव के रूप में प्रस्तुत करता है। इस दृश्य में माता पार्वती शिव के सम्मुख खड़ी हैं और उनके हाथ में पात्र है, जिसमें भांग अर्पित करती हुई दिखाई देती हैं। यह प्रसंग पहाड़ी लोक परंपरा में शिव–पार्वती के दैनिक जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण दृश्य माना जाता है। पृष्ठभूमि में प्राकृतिक तत्व–वृक्ष, भूमि और पशु हिमालयी परिवेश की पहचान को सुदृढ़ करते हैं।

शिव लीला के एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग – शिव विवाह की ओर संकेत करता है। चित्र में गतिशीलता और समूह संरचना दिखाई देती है, जो बारात के दृश्य को दर्शाती है। आकृतियों की सरल रेखाएँ, सीमित रंग योजना और लोक शैली यह स्पष्ट करती है कि यह दृश्य किसी शास्त्रीय दरबारी शैली की बजाय जनसामान्य की दृष्टि से रचा गया है। शिव की बारात में गण, लोक पात्र और वाद्य यंत्रों की उपस्थिति का संकेत मिलता है। यह चित्र हिमालयी लोक मान्यता को दर्शाता है, जहाँ शिव का विवाह एक सामाजिक और सामूहिक उत्सव के रूप में देखा जाता है। यहाँ शिव एक दूल्हे के रूप में, समाज के बीच उपस्थित हैं।

इस भित्ति चित्र में भगवान शिव का नटराज रूप अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अंकित है। शिव नृत्य मुद्रा में हैं, उनका शरीर गतिशील व लयबद्ध प्रतीत होता है। घुमावदार रेखाएँ और संतुलित रचना तांडव की ऊर्जा और सृष्टि के चक्र का संकेत देती हैं। यह रूप सृजन, संरक्षण और संहार–तीनों तत्वों का प्रतीक है। सीमित रंगों और क्षतिग्रस्त सतह के बावजूद शिव की शक्ति और गति स्पष्ट रूप से अनुभव की जा सकती है। यह चित्र दर्शाता है कि पहाड़ी भित्ति चित्रों में गहन दार्शनिक अवधारणाओं को भी सरल और लोक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस प्रकार पहाड़ी भित्ति चित्रकला भारतीय कला परंपरा की एक महत्वपूर्ण धरोहर है। यह शैली न केवल कृष्ण लीला की कोमलता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि मंदिर भित्ति चित्रों में अंकित शिव लीला की सरलता, लोकात्मकता और भावनात्मक सौंदर्य के लिए भी समान रूप से दर्शनीय है। लोक मन की अभिव्यक्ति और शिव लीला का यह कलात्मक प्रस्तुतीकरण पहाड़ी कला को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।◆◆◆

रेलवे में बदल रहे अंग्रेजी रिवाज

1947 में भारत आजाद हो गया परंतु अंग्रेजों के नियम कानून और परंपराएं स्वतंत्र भारत में भी पहले की तरह चलती रहीं। वर्तमान सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व एवं राष्ट्रवादी चिंतन में राष्ट्र को सर्वोपरि मानते हुए अंग्रेजों की निशानियां हटाने का प्रयास किया है। पहले कुछ नियम बदले गए और अब रेलवे ने अंग्रेजों के समय से चली आ रही वर्दी को बदलने का निश्चय किया है। देश की लाइफलाइन कही जाने वाली रेलवे बड़े बदलाव से गुजर रही है। इसी कड़ी में अब रेल कर्मचारियों की यूनिफॉर्म में भी बड़ा बदलाव होने जा रहा है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि रेलवे में अब अंग्रेजों के जमाने के बंदगले वाले काले कोट नहीं दिखेंगे। हमें हर उस चीज को हटाना है जो गुलामी की निशानी है। देश में बड़े पैमाने पर रेलवे का कायाकल्प हो रहा है। हमें अपनी सोच से भी गुलामी की मानसिकता को निकालना होगा। चाहे वह हमारे काम करने का तरीका हो या फिर हमारे पहनावे का तरीका, हमें हर जगह से इन पुरानी चीजों को हटाना होगा। हमारे जो बंद गले का काला सूट अंग्रेजों ने शुरू किया था, आज से यह रेलवे में फॉर्मल ड्रेस नहीं रहेगी। सरकार बड़े पैमाने पर ऐसी पुरानी रीतियों को पहचानने का काम कर रही है जो अंग्रेजों के जमाने से चली आ रही हैं। इसमें विश्वविद्यालयों में होने वाले दीक्षांत समारोहों में पहने जाने वाले गाउन और टोपी भी शामिल हैं।

सनातन विरासत के आदर्श श्रीगुरु जी

- वासुदेव शर्मा

सनातन धर्म एवं संस्कृति की विरासत को पुन: स्थापित करने में श्रीगुरु जी का विशेष योगदान रहा। उनका प्रेरक व्यक्तित्व लाखों युवाओं को राष्ट्रसेवा और हिंदुत्व के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। गुरुजी का व्यक्तित्व गहन अध्ययन, आध्यात्मिकता और मातृभूमि के प्रति नि:स्वार्थ भक्ति से ओतप्रोत था। उनके नेतृत्व में आरएसएस एक सांस्कृतिक आंदोलन बन गया, जिसने देशभक्ति और अनुशासन को मजबूत किया। उन्होंने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास और आपदा राहत जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया। विभाजनकाल में उन्होंने लाखों हिंदुओं की रक्षा के लिए स्वयंसेवकों को प्रेरित किया तथा कश्मीर के भारत में विलय में भूमिका निभाई। गुरुजी ने युवाओं को विचार, कर्मठता और समाजसेवा के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे वे राष्ट्रनिर्माण के स्तंभ बने। उनका जीवन त्याग, बलिदान और विजय की भावना से भरा था, जो आज भी हजारों कार्यकर्ताओं को सुपथ पर चलने की दिशा देता है।

श्री गुरु गोलवलकर जी का वैचारिक चिंतन हिंदू राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय पुनरुत्थान पर केंद्रित था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक के रूप में उन्होंने भारतीय समाज को सनातन मूल्यों के आधार पर संगठित करने का दर्शन प्रतिपादित किया। उनका चिंतन व्यावहारिक और दर्शनिक दोनों स्तरों पर गहन था। गोलवलकर जी का केंद्रीय विचार 'हिंदू राष्ट्र' था, जिसमें हिंदू संस्कृति ही भारत की आत्मा माना गया है। उनका मानना था कि राष्ट्र की एकता भौतिक स्तर पर नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तर पर मजबूत होती है, जहां सभी प्राणी सूक्ष्म एकता से जुड़े होते हैं। 'बंच ऑफ थॉट्स' में उन्होंने स्पष्ट किया कि हिंदू राष्ट्रवाद नफरत पर नहीं, सहयोग और वर्ग शांति पर आधारित है।

गोलवलकर जी ने समाज को चार वर्णों की प्रथा के माध्यम से संगठित करने पर जोर दिया, लेकिन इसे कठोर जातिवाद के रूप में नहीं, बल्कि गुण और कर्म आधारित व्यवस्था के रूप में देखा। वे कहते थे कि समाज का प्रत्येक वर्ग राष्ट्र सेवा में सहयोगी हो। उन्होंने जाति भेदभाव को राष्ट्र-विरोधी बताते हुए एकता का आह्वान किया। उनका चिंतन था कि सामाजिक सद्भाव ही राष्ट्र की शक्ति है, जो आंतरिक कलह को समाप्त करता है।

आर्थिक चिंतन- आर्थिक क्षेत्र में गोलवलकर जी न तो पूर्णत: पूंजीवादी थे न साम्यवादी। उन्होंने 'अधिकतम उत्पादन और समान वितरण' का मंत्र दिया, जिसमें राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता प्रमुख थी। भारत की आर्थिक नीति ग्राम स्वावलंबन और सहकारिता पर आधारित होनी चाहिए। वे उपभोक्तावाद को हिंदू मूल्यों के विरुद्ध मानते थे, जहां संयम और सेवा प्रधान हैं। बेरोजगारी को युद्ध स्तर पर समाप्त करने का उनका सुझाव व्यावहारिक राष्ट्रवाद को दर्शाता है। राजनैतिक चिंतन-राजनीतिक रूप से गोलवलकर जी सर्वधर्म समभाव की हिंदू अवधारणा पर जोर देते थे। वे मानते थे कि राज्य का कर्तव्य राष्ट्र की सांस्कृतिक रक्षा करना है। स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसा के साथ-साथ राष्ट्रवादी संघर्ष को वे आवश्यक बताते थे। विभाजन के बाद उन्होंने एकीकृत भारत की कल्पना की, जहां सभी निवासी हिंदू संस्कृति से जुड़ें। शिक्षा और चरित्र निर्माण शिक्षा को गोलवलकर जी राष्ट्र निर्माण का आधार मानते थे। जबकि भारतीय शिक्षा चरित्र और संस्कार द्वारा निर्माण करती है। शाखा प्रणाली को वे शिक्षा का व्यावहारिक माध्यम बताते थे, जहां अनुशासन, खेल और बौद्धिक चर्चा से स्वयंसेवक विकसित होते हैं। सनातन संस्कृति अध्यात्म और संयम एवं त्यागपूर्ण जीवन पर केंद्रित है। क्योंकि भौतिक उन्नति से जीवन में संसाधनों की प्राप्ति तो हो सकती है परंतु उसमें आनंद की अनुभूति होना संभव नहीं है। पश्चिमीकरण को वे सांस्कृतिक आक्रमण बताते थे, जो भारतीय एकता को कमजोर करता है और साम्यवाद न पूंजीवाद एकता नहीं ला सकता है; केवल सनातन दर्शन ही कर सकता है। गोलवलकर जी केवल विचारक नहीं, कुशल संगठक भी थे। लगभग तेंतीस वर्षों के सरसंघचालक काल में उन्होंने आरएसएस को राष्ट्रीय आंदोलन बनाया। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने संगठन को मजबूत बनाए रखा। उनका जीवन सादगी, चिंतन और सेवा का प्रतीक था। इसलिए स्वयंसेवक उनके जीवन से प्रभावित होकर देश सेवा के लिए अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार हो जाते थे। आज भी श्री गुरु गोलवलकर जी का चिंतन भारत की एकता और विकास के लिए प्रासंगिक है। सनातन मूल्यों के आधार पर आधुनिक चुनौतियों का सामना करने का उनका आदर्श अमर है।◆◆◆

वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी देशभक्त थे जिन्होंने 1901 में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया की मृत्यु पर नासिक में शोक सभा का विरोध किया और कहा कि वो हमारे शत्रु देश की रानी थी, हम शोक क्यूँ करें? वीर सावरकर पहले देशभक्त थे जिन्होंने एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक समारोह का उत्सव मनाने वालों को त्र्यम्बकेश्वर में बड़े-बड़े पोस्टर लगाकर कहा था कि गुलामी का उत्सव मत मनाओ। विदेशी वस्त्रों की पहली होली पूना में 7 अक्तूबर 1905 को वीर सावरकर ने जलाई थी। सावरकर द्वारा विदेशी वस्त्र दहन की इस प्रथम घटना के 16 वर्ष बाद गांधी उनके मार्ग पर चले और 11 जुलाई 1921 को मुंबई के परेल में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। सावरकर पहले भारतीय थे जिनको 1905 में विदेशी वस्त्र दहन के कारण पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज से निकाल दिया गया और दस रूपये जुर्माना किया गया।

वीर सावरकर ऐसे पहले बैरिस्टर थे जिन्होंने 1909 में ब्रिटेन में ग्रेज-इन परीक्षा पास करने के बाद ब्रिटेन के राजा के प्रति वफादार होने की शपथ नहीं ली... इस कारण उन्हें बैरिस्टर होने की उपाधि का पत्र कभी नहीं दिया गया...

वीर सावरकर पहले ऐसे लेखक थे जिन्होंने अंग्रेजों द्वारा ग़दर कहे जाने वाले संघर्ष को '1857 का स्वातंत्र्य समर' नामक ग्रन्थ लिखकर सिद्ध कर दिया। इस पुस्तक पर ब्रिटिश संसद ने प्रकाशित होने से पहले प्रतिबन्ध लगाया था। '1857 का स्वातंत्र्य समर' विदेशों में छापा गया और भारत में भगत सिंह ने इसे छपवाया था जिसकी एक-एक प्रति तीन-तीन सौ रुपये में बिकी थी... भारतीय क्रांतिकारियों के लिए यह पवित्र गीता थी... पुलिस छापों में देशभक्तों के घरों में यही पुस्तक मिलती थी।

वीर सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जो समुद्री जहाज में बंदी बनाकर ब्रिटेन से भारत लाए जाते समय आठ जुलाई 1910 को समुद्र में कूद पड़े थे और तैरकर फ्रांस पहुंच गए थे। सावरकर पहले क्रान्तिकारी थे जिनका मुकद्दमा अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय हेग में चला, मगर ब्रिटेन और फ्रांस की मिलीभगत के कारण उनको न्याय नहीं मिला और उन्हें बंदी बनाकर भारत लाया गया। वीर सावरकर विश्व के पहले क्रांतिकारी और भारत के पहले ऐसे राष्ट्रभक्त थे, जिन्हें अंग्रेजी सरकार ने दो बार आजन्म कारावास की सजा सुनाई थी। वीर सावरकर पहले राजनैतिक बंदी थे जिन्होंने काला पानी की सजा के समय 10 साल से भी अधिक समय तक आजादी के लिए कोल्हू चलाकर 30 पोंड तेल प्रतिदिन निकालने का कीर्तिमान स्थापित किया। वीर सावरकर काला पानी में पहले ऐसे कैदी थे जिन्होंने काल कोठरी की दीवारों पर कंकर और कोयले से कवितायें लिखी। वीर सावरकर पहले देशभक्त लेखक थे, जिनकी लिखी हुई पुस्तकों पर आजादी के बाद कई वर्षों तक प्रतिबन्ध लगा रहा।

वीर सावरकर पहले विद्वान् लेखक थे जिन्होंने हिन्दू को परिभाषित करते हुए लिखा-

'आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वैः हिन्दूरितिस्मृतः।।'

अर्थात् समुद्र से हिमालय तक भारत भूमि जिसकी पितृभू है जिसके पूर्वज यहीं पैदा हुए हैं व यही पुण्य भू है, जिसके तीर्थ भारत भूमि में ही हैं, वही हिन्दू है...

वीर सावरकर प्रथम राष्ट्रभक्त थे जिन्हें अंग्रेजी सत्ता ने 30 वर्षों तक जेलों में रखा तथा आजादी के बाद 1948 में नेहरु सरकार ने गाँधी हत्या की आड़ में लाल किले में बंद रखा पर न्यायालय द्वारा आरोप झूठे पाए जाने के बाद ससम्मान रिहा करना पडा। वीर सावरकर पहले क्रांतिकारी थे जब उनका 26 फरवरी 1966 को उनका स्वर्गारोहण हुआ तब भारतीय संसद में कुछ सांसदों ने शोक प्रस्ताव रखा तो यह कहकर रोक दिया गया कि वे संसद सदस्य नहीं थे, जबकि चर्चिल की मौत पर शोक मनाया गया था..

वीर सावरकर एक महान स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी-देशभक्त, उच्च कोटि के साहित्य के रचनाकार, हिंदी-हिन्दू-हिन्दुस्थान के मंत्रदाता, हिंदुत्व के सूत्रधार वीर विनायक दामोदर सावरकर पहले ऐसे भव्य-दिव्य पुरुष, भारत माता के सच्चे सपूत थे,जिनसे अंग्रेजी सत्ता भयभीत थी।

वीर सावरकर माँ भारती के पहले सपूत थे जिन्हें जीते जी और मरने के बाद भी आगे बढ़ने से रोका गया, पर आश्चर्य की बात यह है कि इन सभी विरोधियों के घोर अंधेरे को चीर कर आज वीर सावरकर के राष्ट्रवादी विचारों का सूर्य उदय हो रहा है।◆◆◆

स्वामी विवेकानंद के सपनों का युवा भारत

पवना शर्मा

युवा वर्ग किसी भी देश का भविष्य कहलाता है। क्योंकि भारत एक युवा देश है, इसलिए यहां के युवा वर्ग पर देश को आत्मनिर्भर बनाने, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जागरण में अपनी भूमिका निभाने तथा राष्ट्र के निर्माण में विशेष योगदान देने का भी दायित्व रहा है। पुनर्जागरण आंदोलन और विशेष क्रांतियों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी रही है। भारत के पुनर्जागरण आंदोलन तथा स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। सन्यासी, गृहस्थी और विद्यार्थी तथा महिलाओं ने युवावस्था में सामाजिक परिवर्तन में अभूतपूर्व योगदान प्रदान किया है, जो आज भी हमारा आदर्श हैं। इस दृष्टि से युवा संन्यासी एवं विश्व स्तर पर भारत को पहचान दिलाने वाले स्वामी विवेकानंद जी का नाम बड़े आदर के साथ स्मरण किया जाता है। उन्होंने अपने सामाजिक जीवन में भाषणों, वक्तव्यों और संवादों के माध्यम से युवाओं को सदाचारपूर्वक राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देने के लिए प्रेरित किया। इसलिए स्वामी विवेकानंद युवाओं के आदर्श बने।

स्वामी विवेकानंद जी भारत के महान दार्शनिक, आध्यात्मिक गुरु और युवाओं के प्रेरणास्रोत थे। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। वे रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे और शिकागो धर्म संसद (1893) में उन्होंने वेदांत दर्शन को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया। विवेकानंद जी का सपना था–एक ऐसा भारत, जहां युवा शक्ति जागृत हो, आत्मविश्वास से भरा हो और राष्ट्र निर्माण में योगदान दे। वे कहते थे– 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।' उनके सपनों का युवा भारत आज भी प्रासंगिक है। वे कहते थे, 'मेरा भारत महान होगा, यदि मेरे युवा मजबूत, निडर और निःस्वार्थ होंगे।' उनका सपना था एक ऐसा भारत जहाँ गरीबी, अज्ञानता और अंधविश्वास का नाश हो। युवा शिक्षा से लैस होकर विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करें। उदाहरणस्वरूप, स्वामीजी के शिष्यों ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा के क्षेत्र में कार्यरत है। आज के युवा भारत को विवेकानंद जी के सपनों से जोडना और उन्हें अपना आदर्श मानकर उन्नति के मार्ग पर आगे बढना आवश्यक है।

वर्तमान भारत तेजी से विकसित हो रहा है–डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी योजनाएँ युवाओं को सशक्त बना रही हैं। लेकिन चुनौतियाँ भी हैं– बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, पर्यावरण संकट और सामाजिक असमानता। विवेकानंद जी कहते थे, 'शक्ति ही जीवन है, दुर्बलता मृत्यु।' युवाओं को नकारात्मकता से बचकर सकारात्मक ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए। व्यस्त हैं, लेकिन राष्ट्रहित में कार्य करें तो भारत विश्व गुरु बनेगा। उदाहरण के लिए, आईआईटी और आईआईएम के युवा स्टार्टअप शुरू कर रहे हैं, जो विवेकानंद जी के "मैनमेकिंग एजुकेशन" के अनुरूप है। विवेकानंद जी के सपनों का युवा भारत आत्मनिर्भर, एकजुट और वैश्विक हों। 'भारत माता की जय' का नारा उन्होंने ही लोकप्रिय किया। युवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचानी चाहिएं। योग और ध्यान से मानसिक शक्ति विकसित करनी चाहिए। यदि युवा नशाखोरी, फास्ट फूड और आलस्य त्याग दें, तो भारत 2047 तक अवश्य विकसित राष्ट्र बनेगा। अंत में, स्वामी विवेकानंद जी के सपनों का युवा भारत संभव है। हमें उनके वचनों को जीवन में उतारना होगा। युवा वर्ग यदि जागरूक हो जाए, तो भारत न केवल आर्थिक महाशक्ति बनेगा, बल्कि आध्यात्मिक केंद्र भी। हम उनके सपनों को साकार करेंगे। विदेशी ताकत ने भारत के युवा को दिशाहीन एवं पथभ्रष्ट करने के लिए सभी प्रकार के हथकंडे अपना रही है और कुछ युवा इस जहरीली मानसिकता का शिकार भी हो रहे हैं परंतु फिर भी युवाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग अपने देश संस्कृति और परंपराओं से स्नेह करने वाला है तथा राष्ट्र के उत्थान, आत्मनिर्भरता एवं राष्ट्र निर्माण के लिए अपना योगदान प्रदान करने का संकल्प लिए हुए हैं। यही भारत की ताकत है और स्वामी विवेकानंद के सपनों के युवा भारत की पहचान भी।◆◆◆

नशाखोरी ने लगाया वर्दी पर दाग

नशे के कारोबार में 11 पुलिसकर्मियों पर की गई कार्रवाई केवल प्रशासनिक निर्णय नहीं, बल्कि हिमाचल प्रदेश के सामाजिक, नैतिक और संवैधानिक ढांचे को बचाने की एक निर्णायक लड़ाई है। समाज को नशामुक्त बनाने का जिम्मा जिन कंधों पर सौंपा गया हो, वही यदि नशे के कारोबार में संलिप्त पाए जाएं, तो यह केवल कानून का उल्लंघन नहीं बल्कि जनता के विश्वास के साथ सबसे बड़ा विश्वासघात होता है। जो वर्दी जनता की सुरक्षा का प्रतीक मानी जाती है, जब वही भक्षक बन जाए, तो उस प्रदेश का भविष्य किसके सहारे सुरक्षित रहेगा – यह सवाल आज हिमाचल के हर जागरूक नागरिक के मन में है। नशे के कारोबार में 11 पुलिसकर्मियों के शामिल पाए जाने के बाद यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि सख्ती न होती, तो आम आदमी खुद को 'राम भरोसे' ही महसूस करता।

चिट्टा तस्करी में संलिप्त 11 पुलिसकर्मियों को सेवा से बर्खास्त करने का त्वरित फैसला ऐतिहासिक है। बर्खास्त किए गए पुलिसकर्मी विजिलेंस, सीआईडी, एसडीआरएफ, भारतीय रिजर्व बटालियन, थानों और विशेष जांच इकाइयों जैसे संवेदनशील विभागों में तैनात थे। यह तथ्य स्थिति की भयावहता को और गहरा करता है, क्योंकि जिन इकाइयों की जिम्मेदारी नशे के नेटवर्क को तोडने् की थी, वहीं से कुछ लोग उसके मजबूत कड़ी बन गए। 'अगर पुलिसकर्मी ही चिट्टा तस्करी में शामिल होंगे, तो इसे रोकेगा कौन? यही वह बिंदु है, जहां सरकार को सख्त से सख्त कदम उठाने ही चाहिए। सरकार को केवल बर्खास्तगी तक ही खुद को सीमित नहीं रखना होगा, अपितू सभी विभागों को निर्देश दिए जाने चाहिए कि चिट्टा तस्करी में संलिप्त कर्मचारियों की विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर शीघ्र मुख्य सचिव को भेजी जाए। साथ ही, नशे के अवैध कारोबार से अर्जित संपत्तियों की पहचान कर उन्हें जब्त करने की प्रक्रिया में तेजी लाई जानी चाहिए। ऐसे अपराध केवल नौकरी तक सीमित सजा तक न रहे, बल्कि आर्थिक रूप से भी अपराधियों की कमर तोड़ी जाए, कुछ इस तरह की कार्रवाई अमल में लाए जाने की जरूरत है। नशे में संलिप्त कर्मियों पर यह सख्ती इसलिए भी जरूरी थी क्योंकि हिमाचल प्रदेश आज नशे की एक गहरी और चिंताजनक समस्या से गुजर रहा है। सर्वेक्षण बताते हैं कि प्रदेश के लगभग 27 प्रतिशत युवा किसी न किसी रूप में नशीले पदार्थों के सेवन में लिप्त हैं, जिनमें 35 प्रतिशत सिंथेटिक ड्रग्स, खासकर चिट्टा, का उपयोग करते हैं। 18 से 45 वर्ष आयु वर्ग सबसे अधिक प्रभावित है और 90 प्रतिशत से अधिक गिरफ्तार आरोपी युवा हैं। शिमला, मनाली और रामपुर जैसे पर्यटन स्थलों पर तस्करी के नेटवर्क तेजी से फैल चुके हैं, जिनके तार अन्य राज्यों से जुड़े हैं। यह गिरोह युवाओं की जिज्ञासा, बेरोजगारी और भ्रम का फायदा उठाकर पूरे परिवारों को तबाही की ओर धकेल रहे हैं।

इसी चुनौती से निपटने के लिए हिमाचल सरकार ने 'चिट्टा मुक्त हिमाचल' अभियान को जन आंदोलन का रूप दिया है। 15 नवंबर 2025 से शुरू हुए विशेष एंटी-चिट्टा अभियान के तहत एक महीने में ही एनडीपीएस एक्ट के अंतर्गत 183 एफआईआर दर्ज की गईं और 250 से अधिक लोगों के खिलाफ कार्रवाई हुई। पीआईटी एनडीपीएस अधिनियम के तहत 21 निवारक प्रस्तावों पर भी कार्रवाई शुरू की गई। दिसंबर 2025 में 1,200 से अधिक ठिकानों पर पुलिस और राजस्व विभाग ने संयुक्त छापेमारी की, जिसमें करोड़ों रुपये की अवैध संपत्ति जब्त की गई।

जनसहयोग को मजबूत करने के लिए सरकार ने चिट्टा गिरोह की सूचना देने पर आकर्षक इनाम घोषित किए हैं – दो ग्राम तक की सूचना पर 10 हजार रुपये, पांच ग्राम पर 25 हजार, 25 ग्राम पर 50 हजार, एक किलो पर पांच लाख रुपये और एक किलो से अधिक मात्रा की सूचना पर 10 लाख रुपये तक का पुरस्कार। इसके लिए 112 आपातकालीन नंबर भी शुरू किया गया है, ताकि आम नागरिक बिना भय अपनी भूमिका निभा सकें।

यह लड़ाई केवल तस्करों या भ्रष्ट कर्मियों के खिलाफ नहीं है, बल्कि उस सोच के खिलाफ है जो नशे को सामान्य मानने लगी है। यह संघर्ष युवाओं के भविष्य, परिवारों की खुशहाली और हिमाचल की आत्मा को बचाने का है। जब सरकार सख्ती दिखाती है और समाज जागरूकता के साथ खड़ा होता है, तभी नशामुक्त हिमाचल का सपना साकार हो सकता है। यदि यह संकल्प निरंतर बना रहा, तो वह दिन दूर नहीं जब हिमाचल अपनी पहचान फिर से एक शांत, सुरक्षित और संस्कारयुक्त प्रदेश के रूप में स्थापित करेगा।◆◆◆

अमेरिका की साम्राज्यवादी नीतियां तीसरे विश्व युद्ध का खतरा

प्रहलाद सबनानी

अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प ने खुले तौर पर घोषणा कर दी है कि ब्रिक्स संगठन के सक्रिय सदस्य देशों– भारत, रूस, ब्राजील एवं चीन–एवं कुछ अन्य देशों पर 500 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाया जा सकता है। इसीलिए उन्होंने 500 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाए जाने सम्बंधी प्रस्ताव अमेरिकी संसद में पेश किया है। घोषित तौर पर तो ट्रम्प द्वारा भारत और चीन द्वारा अमेरिका को निर्यात किए जाने वाले उत्पादों पर टैरिफ इसलिए लगाया जा रहा है क्योंकि यह दोनों देश रूस से भारी मात्रा में कच्चे तेल का आयात कर रहे हैं। वास्तव में ट्रम्प ब्रिक्स संगठन के सदस्य देशों, विशेष रूप से भारत, रूस, ब्राजील एवं चीन से बहुत परेशान है, क्योंकि यह देश अमेरिकी डॉलर को चुनौती देते हुए नजर आ रहे हैं। ब्रिक्स संगठन के सदस्य देशों के बीच होने वाले व्यापार के भुगतान का निपटान करने हेतु ब्रिक्स मुद्रा को लाने का प्रयास भी इन देशों द्वारा किया जा रहा है। इससे निश्चित ही वैश्विक स्तर पर डीडोलराईजेशन की प्रक्रिया तेज होगी। इससे अमेरिका की चौधराहट पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा। अमेरिका के विभिन्न प्रांतो के चुनावों में ट्रंप की हार भी उनकी बौखलाहट का एक प्रमुख कारण है। ट्रंप विश्व के सभी देशों को अपनी शर्तों पर चलाना चाहते हैं और भारत के बाजार में कृषि उत्पादन को बेचने के लिए भी दबाव बना रहे हैं जिसे मोदी सरकार द्वारा स्वीकृत नहीं किया जा रहा है, ताकि भारतीय किसानों के हित सुरक्षित रह सके और भारतीय कृषि उत्पादों का अपना बाजार बना रहे। अन्यथा अमरीकी कृषि उत्पादों के दबाव में भारत का किसान कमजोर हो जाएगा। भारत, रूस, ब्राजील एवं चीन आज विश्व के शक्तिशाली देशों की सूची में शामिल हैं। वेनेजुएला के राष्ट्रपति को उनकी पत्नी सहित ट्रम्प की सेना द्वारा रात्रि को सोते समय गिरफ्तार कर अमेरिका में ले जाया गया है। इसके बाद से ट्रम्प द्वारा यह बयान दिया जा रहा है कि वेनेजुएला स्थित तेल के कुओं से कच्चे तेल के भंडार को अब अमेरिकी कम्पनियों द्वारा निकाला जाएगा एवं इसे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बेचा जाएगा और इस व्यापार से होने वाले लाभ पर अमेरिका का अधिक एवं वेनेजुएला का कम अधिकार होगा। यह तो संप्रुभता सम्पन्न राष्ट्र के अधिकारों का सीधा हनन है। इसी प्रकार, अब ग्रीनलैंड नामक द्वीप जिस पर इस समय डेनमार्क का अधिकार है, को भी अमेरिका

अपने कब्जे में लेना चाहता है। अमेरिका के पास पहिले से ही ग्रीनलैंड में एक सैन्य अड्डा 'पिटुफिक स्पेस बेस' है। परंतु, ट्रम्प यह पूरा द्वीप ही अमेरिकी कब्जे में लाना चाहते हैं क्योंकि अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए इस द्वीप की उन्हें जरूरत है। वेनेजुएला को हथियाने के तुरंत बाद ट्रम्प ने वेनेजुएला के पश्चिमी पड़ौसी देश कोलम्बिया जहां तेल के विशाल भंडार है तथा सोना, चांदी, पन्ना प्लेटिनम और कोयले की भारी मात्रा में खदाने हैं, को भी चेतावनी दे दी है कि सरकार विरोधी प्रदर्शनों पर इतनी सख्ती नहीं की जानी चाहिए कि प्रदर्शन करने वाले नागरिकों की मौत ही हो जाए। अन्यथा, अमेरिका को इस स्थिति से निपटने के लिए हस्तक्षेप करना पड़ सकता है। ईरान भी इस समय बड़े पैमाने पर सरकार विरोधी प्रदर्शनों का सामना कर रहा है और ट्रम्प ने ईरान को भी चेतावनी दे डाली है कि ईरान में अगर और अधिक प्रदर्शनकारियों की मौत हुई तो अमेरिका को कठोर जवाब देना होगा। क्यूबा, फ्लोरिडा (अमेरिका) से केवल 90 मील दक्षिण स्थित द्वीप है और 1960 के दशक की शुरुआत से ही अमेरिकी प्रतिबंधों को झेल रहा है। परंतु, अब क्यूबा, वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी के पश्चात, तेल की आपूर्ति ठप्प होने के चलते मुश्किलों से घिर गया है और इसे अब अमेरिका पर निर्भर रहना ही होगा। अभी हाल ही में नेपाल, बांग्लादेश एवं श्रीलंका में सत्ता परिवर्तन कराने में भी अमेरिका का हाथ बताया जाता है। अमेरिका द्वारा इन हस्तक्षेपों को जिन कारणों से उचित ठहराया जाता है, उनमें आतंकवाद विरोधी अभियान, शासन परिवर्तन, क्षेत्रीय विस्तार, अमेरिकी नागरिकों और राजनयिकों की सुरक्षा, आर्थिक अवसर, राष्ट्र निर्माण को बढ़ावा देना, लोकतंत्र को बढ़ावा देना और अंतर्राष्ट्रीय कानून को लागू करना आदि है। अमेरिका की विदेश नीति के तहत अमेरिका की नजर वेनेजुएला, ग्रीनलैंड, कोलम्बिया, ईरान, क्यूबा, मेक्सिको एवं नाईजेरिया में भी हस्तक्षेप करने की नजर आती है। यूरोप के सात देशों फ्रान्स, जर्मनी, इटली, पोलैंड, स्पेन, ब्रिटेन एवं डेनमार्क ने अमेरिका को गम्भीर चेतावनी दी है कि यदि ग्रीनलैंड पर अमेरिका द्वारा कोई सैनिक कार्यवाही की गई तो इसके गम्भीर परिणाम अमेरिका को भुगतने होंगे।

जी-7 देशों का वैश्विक अर्थव्यवस्था में योगदान आज की वैश्विक व्यवस्था में जब विभिन्न देश विभिन्न कारणों से एक दूसरे पर निर्भर हैं, ऐसे में अमेरिका द्वारा विश्व के कई शक्तिशाली देशों के साथ अपने सम्बन्धों को खराब करना, अमेरिका के हितों के विपरीत तो है ही, साथ ही, वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी विपरीत रूप से प्रभावित कर सकता है। अमेरिकी एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए इसे अमेरिकी नागरिकों को तो समझना ही होगा। वर्तमान में ब्रिक्स देशों की अध्यक्ष भारत के पास आने से ब्रिक्स की अपनी मुद्रा बनाए जाने की संभावना से अमेरिकी डॉलर को चुनौती मिल सकती है जिससे तनाव और अधिक बढने की संभावना है। ◆◆◆

मदरसा बोर्ड 1 जुलाई 2026 से पूरी तरह समाप्त

उत्तराखंड सरकार ने मदरसा बोर्ड को 1 जुलाई 2026 से पूरी तरह समाप्त करने का निर्णय लिया है। इसके स्थान पर उत्तराखंड अल्पसंख्यक शिक्षा प्राधिकरण गठित किया गया है, जिसके तहत मदरसे उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा परिषद उत्तराखंड बोर्ड से संबद्ध होंगे। यह कदम नई शिक्षा नीति (NEP 2020) को लागू करने और आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उठाया गया है। सरकार ने उत्तराखंड अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थान विधेयक 2025 को मंजूरी दी, जिसके बाद मदरसा बोर्ड भंग हो जाएगा। सभी मदरसों को प्राधिकरण से मान्यता और बोर्ड से संबद्धता लेनी होगी, जिसमें आधुनिक विषय जैसे विज्ञान, गणित और भाषाएं शामिल होंगी। इससे पहले बोर्ड के तहत रजिस्टर्ड मदरसों की मान्यता रद्द हो जाएगी।

नई शिक्षा व्यवस्था : मदरसे अब मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली से जुड़ेंगे, जहां राष्ट्रीय पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क लागू होगा। धार्मिक शिक्षा के साथ आधुनिक शिक्षा अनिवार्य होगी, और संस्थानों को भवन सुरक्षा, शिक्षक योग्यता जैसे मानकों का पालन करना पड़ेगा। अल्पसंख्यक समुदाय के सभी शैक्षणिक संस्थान इसी प्राधिकरण के दायरे में आएंगे।

होने वाले लाभ : अल्पसंख्यक बच्चों को समान शैक्षिक अवसर मिलेंगे, जिससे प्रतियोगी परीक्षाओं और रोजगार में बेहतर तैयारी हो सकेगी। अनियमितताओं पर अंकुश लगेगा, सरकारी अनुदान और निगरानी पारदर्शी बनेगी। सामाजिक समानता बढ़ेगी और बच्चे मुख्यधारा से जुडक़र समग्र विकास कर सकेंगे। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर धामी ने कहा कि सरकार का उद्देश्य है कि प्रदेश का हर बच्चा चाहे वह किसी भी वर्ग या समुदाय का हो, समान शिक्षा और समान अवसरों के साथ आगे बढ़े। इस कदम के साथ उत्तराखंड देश का पहला राज्य बन जाएगा, जहां मदरसा बोर्ड को समाप्त कर अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थानों को मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली से जोड़ा जाएगा। ◆◆◆

हिमाचल की चोटियों पर घटता हिमपात
पिघलते ग्लेशियर एक बड़ी चुनौती

डा. सतपाल, शिक्षाविद

हिमपात में कमी जलवायु परिवर्तन को और तेज करती है, जिससे भविष्य में तापमान बढ़ने और मौसम के असामान्य व्यवहार की आशंका, अनियमित वर्षा, भूस्खलन, की संभावना बढ़ जाती है।

हिमाचल प्रदेश का प्राकृतिक सौंदर्य, बर्फ की चादर व गर्मियों में ठंडी हवाएं पर्यटकों के मन को मोह लेती हैं। अपनी हिमाच्छादित पर्वत श्रृंखलाओं, बर्फीली वादियों और सदानीरा नदियों के कारण ही हिमाचल प्रदेश प्राकृतिक संतुलन का प्रतीक रहा है। यहां की भौगोलिक संरचना पूरी तरह हिमपात, ग्लेशियरों और उनसे निकलने वाली नदियों पर आधारित है। तापमान वृद्धि के कारण हिमालयी क्षेत्रों में पड़ने वाली बर्फ व सर्दियों की अवधि में भी निरंतर कमी देखने को मिल रही है। प्रदेश की राजधानी शिमला, मनाली, धर्मशाला, चम्बा-पांगी, कुल्लू, किन्नौर और लाहौल-स्पीति जैसे क्षेत्रों में हिमपात कम हो रहा है। कभी कभार तो हिमपात अप्रैल तक भी होता था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में जनवरी में भी प्रदेशवासियों की आंखें हिमपात को निहारती रहती हैं, अगर हिमपात होता भी है, तो नाममात्र। हिमपात प्राकृतिक जल भंडारण, अपितु कृषि के लिए भी प्राकृतिक रूप से सहायक होता है। मिट्टी में बर्फ की परत चढ़ जाने के कारण अनेकों प्रकार के मृदा रोग, विषाणु-कीटाणुओं का नाश तथा जल स्रोतों का प्राकृतिक रूप से शुद्धिकरण होता है। परंतु अब स्थिति यह है कि सर्दियों में बर्फ के स्थान पर बारिश भी कम हो रही है, जो गहन चिंता का विषय है। आंकड़ों के अनुसार 1990 से 2000 के दशक के बीच प्रदेश के जिला शिमला में जहां औसतन 129 सेंटीमीटर बर्फबारी होती थी, वहीं 2010 से 2020 के दौरान यह घटकर 80 सेंटीमीटर रह गई। पिछले 3 वर्षों में तो हिमपात का यह आंकड़ा दहाई के अंक को भी नहीं छू पाया, जो इस क्षेत्र के लिए असामान्य और चिंताजनक विषय है। यह चिंता केवल शिमला तक ही सीमित नहीं रहती, अपितु राज्य के दूसरे जिलों में भी स्थिति ठीक इसी प्रकार की ही दिखती है। राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र और स्पेस एप्लिकेशन सेंटर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार हिमाचल प्रदेश के प्रमुख नदी बेसिनों में कुल बर्फ क्षेत्र का लगभग 18.5 प्रतिशत तक सिकुड़ जाना भविष्य के जल संकट का स्पष्ट संकेत है। प्रदेश में बर्फबारी में कमी का सबसे गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव हिमाचल प्रदेश के ग्लेशियरों पर भी पड़ना स्वभाविक है। आंकड़े ग्लेशियरों के क्षेत्रफल में 20 से 25 प्रतिशत तक की कमी को प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 1984 से 2023 के बीच हिमालयी क्षेत्र में ग्लेशियर झीलों की संख्या और क्षेत्रफल में 27 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। यह स्थिति ग्लेशियर झील विस्फोट जैसी प्राकृतिक आपदाओं की आशंका को बढ़ा रही है, जो पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हो सकती हैं। ग्लेशियरों के सिकुड़ने और बर्फ में गिरावट का सीधा असर हिमाचल की प्रमुख नदियों पर पड़ता भी दिख रहा है। ये नदियां हिमपात और ग्लेशियरों से मिलने वाले जल पर निर्भर हैं। सतलुज बेसिन में बर्फ कवर, ब्यास नदी का जल प्रवाह तथा रावी बेसिन में बर्फ क्षेत्र की कमी दर्ज की गई है, जिससे प्रदेश में निकट भविष्य में जल आपूर्ति अनियमित होने की संभावना में दिखती प्रतीत होती है। पंजाब, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों की जल सुरक्षा भी इन्हीं पर निर्भर करती है। हिमपात में कमी होने से न केवल जल संकट की स्थिति बल्कि प्रदेश की कृषि और बागवानी पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बागवानी में ठंडे क्षेत्रों की फसलों को पर्याप्त ठंड (चिलिंग आवर) न मिलने से उत्पादन और गुणवता प्रभावित हुई है। निकट भविष्य में जहां शीतकालीन पर्यटन, स्कीइंग व बर्फ से जुड़ी पर्यटन गतिविधियों को मुख्य आधार माना जा सकता है, उसमें निश्चित रूप से कमी देखने हो मिल रही है, जो प्रदेश में रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। हिमपात में कमी जलवायु परिवर्तन को और तेज करती है, जिससे भविष्य में तापमान बढ़ने और मौसम के असामान्य व्यवहार की आशंका भी बढ़ जाती है। अनियमित वर्षा, भूस्खलन, बादल फटना और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं की संभावना बढ़ जाती है, जिसके उदाहरण पिछले तीन वर्षों में हमें प्रदेश में देखने को मिले हैं। इसके पीछे जलवायु परिवर्तन, ग्रीन हाउस गैसों में वृद्धि, वनों की कटाई एवं आग, पश्चिमी विक्षोभ में अनियमितता, आधुनिकीकरण तथा पर्यावरण प्रदूषण विद्यमान हैं। यह एक वैश्विक चुनौती है, फिर भी स्थानीय स्तर पर प्रभावी उपाय करने की जरूरत है। ◆◆◆

सूना आंगन

रूठ चली अब धूप पुराने आंगन की।
सुनती न अब हूक पुराने आंगन की।।
अमराई लो सूख चली अब न सुनती।
कोयल की वो कूक पुराने आंगन की।।
ताले हैं हर ओर हवेली पर, होंठों पर।
कब सुनती दो टूक पुराने आंगन की ।।
शौक कहें या मज़बूरी रहना शहरों में।
मन में रहती भूख पुराने आंगन की।।
कल होने वाली बातें थी, कहती वाणी।
आज हुई क्यों मूक पुराने आंगन की ।।
दूर शहर में रहते हैं घर वाले अब तो।
ये तुलसी जाए सूख पुराने आंगन की।।
लोग तमाशा देखें सारे चुपके चुपके।
नालायक की चूक पुराने आंगन की।।
रहती थीं गौरैया अपने नीड़ बनाए अब।
दिखती न शहतूत पुराने आंगन की।।

शक्ति चंद राणा

अब भी वक्त है संभल जाओ

जब अपने ही अपने का रस्ता रोकने लगे,
तो सपनों के दीपक भी झिलमिलाने लगे।
जहाँ कभी मिलकर दिल धड़कते थे,
वहाँ अब मतभेदों के बादल गहराने लगें।
हम वो वंश हैं, जहां शौर्य पलता रहा,
पृथ्वीराज का शौर्य गगन छूता रहा।
एक तलवार थी जो सौ दुश्मन काटती,
पर बँटवारे की आग में देश जलता रहा।
महाराणा प्रताप ने जंगलों में हुंकार भरी,
स्वाभिमान भूख से बड़ा है यह सिखाया।
घास की रोटियां खाई मगर झुके नहीं,
प्रताप की मिट्टी में आज भी वो तेज़ है,
जिसने कहा – हर भारतवासी में मेरा देश है।
अब भी वक्त है – ज़रा संभल जाओ,
भाईचारे की दीवारें खुद गिराओ।
जो 'मैं' में डूबा, वो खो गया,
जो 'हम' में जिया, वो अमर कहलाओ।
उठो भारत के सपूतो, प्रण ये दो,
पृथ्वीराज, प्रताप, शिवाजी को याद करो।
एकता की मशाल फिर से जलाओ,
अपने कर्म से भारत को आबाद करो।
हम वो हैं जो मिट्टी से सोना बनाते हैं,
कर्म और प्रेम से भारत सजाते हैं।
नफ़रत की आग को अब बुझा दो,
देश की डोरी फिर थाम लो, हाथ बढ़ा दो।

चेतन चौहान, कमलानगर,
संजौली, शिमला, हि.प्र.

शाश्वत प्रेम

तुम वो फूल हो जिसको मैं बिना स्पर्श के
खिलता हुआ और महकता हुआ
देखना चाहता हूं।
तुम मेरी वो अधूरी ख्वाहिश हो
जिसके पूरे होने का इंतजार
मैंने कई युगों तक किया है।
तुम मेरे जीवन का वो अंतिम अध्याय हो
जिसके पूरा होने पर शाश्वत आनंद
मुझे स्पर्श कर जाएगा।

डॉ.राजीव डोगरा, (युवा कवि लेखक)
कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश

मातृवंदना विशेषांक 2026 के लिए आलेख, रचनाएं आमंत्रित

मातृवंदना जागरण पत्रिका के मार्च–अप्रैल 2026 में प्रकाशित किए जाने वाले विशेषांक **'पंच परिवर्तन से समाज परिवर्तन'** विषय पर विद्वान लेखकों, स्वयंसेवकों से पर्यावरण संरक्षण, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य, स्व जागरण तथा सामाजिक समरसता पंच परिवर्तन के इन विषयों पर हिमाचल प्रदेश में सफल, सार्थक एवं परिणामकारी कार्यों के उदाहरणों के लेख एवं संस्मरण चित्रों सहित 20 फरवरी 2026 तक संग्रहणीय विशेषांक में प्रकाशन के लिए सादर आमंत्रित हैं।

ईमेल : matrivandanashimla@gmail.com
व्हाट्सएप नंबर : 7650000990 संपादक 9418 470345

विश्व ध्यान दिवस

भीतर की शांति से बेहतर जीवन

शिखा मनकोटिया
योग थेरेपिस्ट एवं
गर्भ संस्कार विशेषज्ञ

आज का युग तेज़ रफ्तार, प्रतिस्पर्धा और निरंतर बदलती चुनौतियों का युग है। भौतिक सुविधाओं की प्रचुरता के बावजूद मनुष्य का मन पहले से अधिक अशांत, तनावग्रस्त और असंतुलित होता जा रहा है। चिंता, अवसाद, अनिद्रा और मानसिक थकान जैसी समस्याएं अब आम हो चुकी हैं। ऐसे समय में ध्यान (Meditation) एक सरल, सुलभ और प्रभावी उपाय के रूप में सामने आता है, जो व्यक्ति को स्वयं से जोड़कर आंतरिक शांति और मानसिक संतुलन प्रदान करता है। इसी महत्व को रेखांकित करने के लिए हर वर्ष 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस मनाया जाता है।

विश्व ध्यान दिवस का उद्देश्य और महत्व : विश्व ध्यान दिवस का उद्देश्य लोगों को मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-जागरूकता और आंतरिक शांति के महत्व से अवगत कराना है। 21 दिसंबर वर्ष की सबसे लंबी रात्रि का दिन होता है, जिसे आत्मचिंतन और मौन के लिए प्रतीकात्मक रूप से उपयुक्त माना जाता है। ध्यान भी हमें यही सिखाता है कि बाहरी शोर से हटकर अपने भीतर झाँकना और स्वयं को समझना जीवन के लिए आवश्यक है।

ध्यान की परंपरा भारत की प्राचीन यौगिक संस्कृति से जुड़ी हुई है। वेदों, उपनिषदों और पतंजलि योगसूत्र में ध्यान को आत्म-विकास और मानसिक शुद्धि का महत्वपूर्ण साधन माना गया है। आज यह परंपरा वैश्विक स्तर पर स्वीकार की जा चुकी है और आधुनिक विज्ञान भी इसके लाभों की पुष्टि करता है।

आधुनिक जीवन में ध्यान की आवश्यकता : आज का मनुष्य या तो भविष्य की चिंताओं में उलझा रहता है या अतीत की स्मृतियों में। ध्यान उसे वर्तमान क्षण में लाकर मानसिक स्थिरता प्रदान करता है। नियमित ध्यान अभ्यास से मन की चंचलता कम होती है, सोच स्पष्ट होती है और जीवन की चुनौतियों का सामना अधिक संतुलित ढंग से किया जा सकता है।

ध्यान केवल मन को शांत करने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को अपने विचारों और भावनाओं को समझने की क्षमता देता है। इससे व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आता है और जीवन के प्रति दृष्टिकोण अधिक स्वस्थ बनता है।

ध्यान के वैज्ञानिक लाभ

आधुनिक शोध यह दर्शाते हैं कि नियमित ध्यान अभ्यास से –

- तनाव और चिंता में कमी आती है
- एकाग्रता और स्मरण शक्ति बढ़ती है
- भावनात्मक संतुलन और आत्मविश्वास विकसित होता है
- नींद की गुणवत्ता में सुधार होता है
- हृदय स्वास्थ्य और रक्तचाप पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है

इन कारणों से ध्यान को आज एक व्यावहारिक और वैज्ञानिक जीवनशैली के रूप में अपनाया जा रहा है।

बच्चों और गर्भवती माताओं के लिए ध्यान

बच्चों के लिए ध्यान एकाग्रता, अनुशासन और भावनात्मक संतुलन विकसित करने में सहायक है। सरल श्वसन अभ्यास और छोटी ध्यान विधियां उनके मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

गर्भवती महिलाओं के लिए ध्यान विशेष रूप से लाभकारी है। ध्यान गर्भावस्था के दौरान तनाव और भय को कम करता है, माँ-शिशु के बीच भावनात्मक जुड़ाव बढ़ाता है और सकारात्मक गर्भ संस्कार को प्रोत्साहित करता है।◆◆◆

श्री राम और भरत का अमर प्रेम

श्री राम एक आदर्श राजा, पति, भाई, पुत्र और मर्यादा का पालन करने वाले हैं। उन्होंने जीवन पर्यंत धर्म का पालन किया और कभी भी अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटे। श्री राम और भरत के भ्रातृ प्रेम की अनुपम कथा रामायण के अयोध्या कांड में वर्णित है। कथा वनवास के समय की है, जब राम माता कैकेयी के वरदान से वन चले गए थे। राजा दशरथ की मृत्यु के बाद अयोध्या में शोक की लहर दौड़ गई। भरत अपने ननिहाल से तुरंत अयोध्या लौटे। वहां पहुंचकर उन्होंने कैकेयी से सारा वृत्तांत सुना। भरत क्रोधित हो उठे। उन्होंने कैकेयी को दोषी ठहराया और कहा, 'माता, आपने हमारे पिता का वध कर डाला और राम भैयाजी को वन भेज दिया।

मैं सिंहासन कभी नहीं लूँगा।' भरत ने तुरंत राम की खोज में चित्रकूट पहुंचने का निश्चय किया। गुरु वशिष्ठ, शत्रुघ्न और सेना साथ लेकर वे वन की ओर प्रस्थित हुए। उन्होंने राम के चरण पादुकाएं प्राप्त कीं, जो श्री राम ने अनुज भ्राता को सौंप दी थीं। चित्रकूट पहुंचकर भरत ने राम को देखा, राम वन वेश में शांत बैठे थे, लक्ष्मण और सीता उनके पास थे। भरत दौड़कर उनके चरणों में गिर पड़े। वे रोते हुए बोले, 'भैया, पिताजी चल बसे। आप लौट आएं, राज्य संभालें, यह सिंहासन आपका है।' राम ने मुस्कुराते हुए कहा, 'भरत, पिताजी के वचन पालन करना मेरा धर्म है। मैं 14 वर्ष वन में रहूंगा।' भरत ने विनती की, 'भैया, यदि आप नहीं लौटते, तो मैं भी वनवास में आपके साथ रहूंगा'

भरत ने स्पष्ट कहा कि यदि आप मेरे साथ अयोध्या नहीं लौटते हैं तो 'मैं राज्य का त्याग कर दूंगा। आपकी पादुकाएं ही राज करेंगी। मैं नंदिग्राम में तपस्वी बनकर जनता की सेवा करूंगा' अंततः राम सहमत हुए और उन्होंने अपनी पादुकाएं भरत को सौंपी, भरत ने पादुकाएं सिंहासन पर स्थापित कीं और स्वयं नंदीग्राम में तपस्वी का जीवन व्यतीत करते हुए राजा का भी दायित्व निभाया और 14 वर्षों के बाद श्रीराम के अयोध्या लौटने पर राज्य का दायित्व श्रीराम को सौंप दिया। विश्व इतिहास में भरत-श्रीराम के भ्रातृत्व प्रेम की दूसरी कोई और मिसाल नहीं मिलती है, जहां एक भाई राज्य का त्याग कर दूसरे को सौंप दें। ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. किस भारतीय शासक ने 'विजय स्तंभ' (चित्तौड़गढ़) बनवाया?
2. हिमाचल प्रदेश का राज्य पक्षी कौन-सा है?
3. भारत का वह प्राचीन विश्वविद्यालय जिसकी स्थापना गुप्त काल में हुई थी?
4. हिमाचल प्रदेश की सबसे ऊँची चोटी का नाम?
5. 1857 के विद्रोह में झाँसी की रानी का मूल नाम क्या था?
6. हिमाचल प्रदेश में 'माछोई' झील किस जिले में स्थित है?
7. भारत का पहला धातु-मुद्रा जारी करने वाला राज्य?
8. हिमाचल प्रदेश का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान?
9. औरंगजेब ने 'अलमगीर' की उपाधि किस वर्ष धारण की?
10. हिमाचल प्रदेश में 'चिंदी' किसका प्रसिद्ध त्योहार है?

1. राणाकुंभा, 2. जुजुराना, 3. नालंदा, 4. रीओपर्गियल 5. मणिकर्णिका 6. लाहौल-स्पीति, 7. मगध 8. ग्रेटहिमालयन, 9. 1659, 10. शिव

हिमाचल के कृषि वैज्ञानिक डॉ. प्रेमलाल गौतम को पद्मश्री सम्मान

हिमाचल के बिलासपुर जिला की मिट्टी से निकले एक वैज्ञानिक डॉ. प्रेम लाल गौतम ने अपनी मेहनत और शोध से देश की खेती को नई दिशा दी है। उनके इसी योगदान के लिए इस गणतंत्र दिवस पर उन्हें पद्मश्री सम्मान मिला है। बिलासपुर से ताल्लुक रखने वाले प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक को यह सम्मान मिलना पूरे प्रदेश के लिए गौरव का पल है।

किसानों के लिए उपयोगी फसल किस्मों का विकास : डॉ. गौतम ने अपने शोध कार्यों के दौरान गेहूं, सोयाबीन, फॉक्सटेल मिलेट, राइस बीन, अमरनाथ और बकव्हीट सहित 12 से अधिक उन्नत फसल किस्मों के विकास में अहम भूमिका निभाई। उनके शोध से किसानों की उत्पादकता बढ़ी और कृषि क्षेत्र को मजबूती मिली।

कई शीर्ष पदों पर निभाई जिम्मेदारी : अपने लंबे करियर में डॉ. गौतम ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में उप महानिदेशक, राष्ट्रीय पादप अनुवांशिक संसाधन ब्यूरो के निदेशक, गोविंद बल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय पंतनगर के कुलपति और पादप प्रजाति संरक्षण एवं कृषक अधिकार प्राधिकरण के अध्यक्ष जैसे अहम पदों पर कार्य किया. वर्तमान में वे डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा के कुलाधिपति और करियर प्वाइंट यूनिवर्सिटी, हमीरपुर के प्रो-चांसलर हैं।

साई इटरनल फाउंडेशन

(पूर्व में साई इंजीनियरिंग फाउंडेशन)

धारा 8 के अंतर्गत पंजीकृत, गैर-लाभकारी (Not-for-Profit) संस्था

साई इटरनल फाउंडेशन समाज-कल्याण और जनहित से जुड़े कार्यों के माध्यम से दीर्घकालिक, समग्र तथा सतत सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु प्रतिबद्ध है। संस्था के प्रमुख कार्य-क्षेत्र शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कृषि, सामाजिक कल्याण, आजीविका, आपदा राहत, जल एवं स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण तथा खेल प्रोत्साहन हैं। इन क्षेत्रों में संस्था छात्रवृत्ति कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागरूकता एवं सहायता सेवाएँ, वृक्षारोपण एवं वर्षा जल संचयन, आपदा राहत अभियान तथा ग्रामीण विकास कार्यक्रम जैसी पहलों के माध्यम से कार्य करती है।

"प्रतिफल की अपेक्षा किए बिना समाज की सेवा करें।"

"Serve the Society without the thought of return."

साई इटरनल फाउंडेशन

साई भवन, सेक्टर-IV, न्यू शिमला, शिमला - 171009

वेबसाइट : www.saieternalfoundation.com, संपर्क : 0177-2670349, 9816499977

Sarvhitkari Shiksha Niketan

Arise ! Awake !
and stop not till the goal is achieved

A Culture Oriented English Medium
Boy's Residential & Co-education for Day Scholars'
(Affiliated to C.B.S.E., New Delhi)
Barog bye-pass Road Kumarhatti Distt. Solan (H.P.) - 173229
(A-Unit of Vidya Bharti) Run by : Himachal Shiksha Samiti. Shimla

MANAGED BY :
JINDAL CHARITABLE TRUST, NABHA (Pb.)

Registration/Admission Open for Class Nursery to X

LOCATION

The complex is situated on Barog bye-pass Road, Kumarhatti. It is less than 2 Km. from Kumarhatti and is about 55 Km, from Chandigarh

OUR AIM

IS TO PROMOTE A national Education System which will develop generation of young men and women who will have complete faith in Hindu values and ideals, who will be National to the core, be fully developed from the Physical, Mental, Intellectual and Spiritual angles.

PROGRAMMES

- An educational philosophy commensurate with Bharatiya Sanskriti.
- To pass over the National heritage of invaluable spiritual wealth to coming generation;
- Special emphasis on Physical Education, Yoga, Music, Sanskrit Moral and Spiritual Education.

Phone : 98161-49253, 98163-47802, 98571-20062, 9418558030

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on : YouTube